डाक पंजीयन नं. 99/2021-23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.aadhuniksamachar.com

PG-5

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

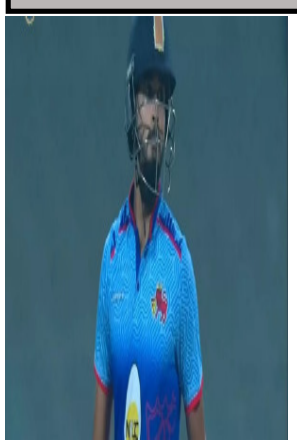

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

PG-8

सिनेमा:-भड़के राजीव सेन बोले- मैं इस टॉर्चर के लिए इसे कभी माफ नहीं करूंगा

वर्ष -08 अंक -208 | प्रयागराज, शनिवार, 05 नवंबर, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

राष्ट्रपति जो बाइडन ने मध्यावधि चुनाव में मतदान करने के लिए युवाओं से की अपील

न्यू मैक्सिको। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने मध्यावधि चुनाव से पहले अपने प्रमुख भाषण में गुरुवार को न्यू मैक्सिको में युवा मतदाताओं से अपील की। बाइडन का तीन दिवसीय अभियान न्यू मैक्सिको के सबसे बड़े शहर अल्बुकर्क में

शुरू हुआ, जहां उन्होंने एक सामुदायिक कालेज में स्टूडेंट ऋण में अरबों डालर को रद्द करने पर बात कही। बाइडन ने छात्रों को किया संबोधित राष्ट्रपति ने डेमोक्रेट्स के लिए छात्रों को संबोधित किया। बाइडन ने कहा कि उनकी छात्र ऋण नीतियां और न्यू मैक्सिको का मुफ्त कालेज ट्यूशन कार्यक्रम, देश में सबसे बड़ा युवा अमेरिकियों को एक आधुनिक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए बनाया गया है।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को राहत

न्यूयॉर्क। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सात साल पुराने एक केस का निपटारा हो गया है। साल 2015 में राष्ट्रपति चुनाव के अभियान के दौरान ट्रंप के सुरक्षाकर्मियों पर प्रदर्शनकारियों से झड़प करने के आरोप लगे थे। प्रदर्शनकारियों के एक समूह ने ट्रंप के खिलाफ केस दर्ज किया था। दोनों पक्षों के बीच समझौता क्या हुआ है, इसका पता नहीं चल सका है। मुकदमे के निपटारे के बाद ट्रंप की वकील अलीना हब्बा ने कहा, 'हम केस को आगे बढ़ाना चाहते थे, लेकिन दूसरे पक्ष ने इसके निपटारा करने के लिए कहा।

अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम को असंवैधानिक घोषित करने की मांग वाली याचिका परखेगा सुप्रीम कोर्ट

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग

को असंवैधानिक घोषित करने की मांग वाली याचिका पर विचार करने के लिए गुरुवार को सहमत हो गया। जस्टिस एसके कौल और जस्टिस अभय एस ओका की पीठ ने अटार्नी जनरल आर वेंकटरमणी से कहा कि उसने याचिका स्वीकार कर ली है और इस मामले को इसी तरह के एक अन्य मामले से जोड़ दिया है। शीर्ष अदालत एनजीओ विनियोग परिवार ट्रस्ट द्वारा दायर एक याचिका पर सुनवाई कर रही थी। इसमें कहा गया था कि राज्य अल्पसंख्यक समुदायों की किसी भी भाषा, लिपि या संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए किसी भी दायित्व के अधीन नहीं है। याचिका में कहा गया है कि राज्य की सक्रिय कार्रवाई और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम (1992) को लागू करना, अल्पसंख्यकों, मुख्य रूप से मुसलमानों को बड़ी रकम देने पर राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना करना, कोई संवैधानिक जनादेश नहीं है और इसे असंवैधानिक कहा जा सकता है। इससे पहले, अल्पसंख्यकों की पहचान के सिलसिले में केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में स्टेटस रिपोर्ट दाखिल कर कहा था कि यह एक संवेदनशील मामला है। इसके दूरगामी परिणाम होंगे। मामले में 14 राज्यों ने अपना मत दे दिया है। 19 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की अंतिम राय अभी नहीं आई है। ऐसे में कोर्ट राज्यों को अंतिम राय प्रकट करने के लिए कुछ और समय दे।

रूस से तेल खरीद को लेकर भारत ने फिर साफ किया अपना रुख, कहा- जो उपलब्ध वही खरीद रहे हैं

अबू धाबी। केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने सोमवार को एक बार फिर कहा है कि रूस से तेल खरीदना बंद करने के लिए भारत किसी

नैतिक संघर्ष में नहीं है। सीएनएन के रिपोर्टर के इस सवाल पर कि रूस से ज्यादा तेल खरीदने को लेकर भारत को कोई हिचक है, पुरी ने कहा, 'बिल्कुल नहीं, कोई नैतिक द्वंद नहीं है। हम किसी एक्स या वाई से तो तेल खरीद नहीं रहे हैं, हम जो उपलब्ध है वह खरीद रहे हैं। मैं खरीदारी नहीं करता, यह तेल कंपनियां हैं जो खरीदारी करती हैं।' भारतीय खरीद का बचाव करते हुए पुरी ने कहा कि भारत रूस के तेल का 2.0 प्रतिशत नहीं, मात्र 0.2 प्रतिशत खरीद कर रहा है। भारत रूस से जितना तेल एक तिमाही में खरीदता है यूरोप उससे उतनी खरीद आधे दिन में ही कर लेता है। उनसे पूछा गया था कि क्या भारत रूस से रियायती दर पर तेल खरीद का लाभ उठा रहा है। पश्चिमी देशों द्वारा रूसी तेल पर पाबंदी सख्त करने पर भारत के बैकअप योजना के बारे में पूछे जाने पर पुरी ने कहा, 'हमारे पास कई बैकअप योजना है। आप जिस तरह से मामले को देख रहे हैं मैं वैसे नहीं देख रहा। अमेरिका और यूरोप के साथ हमारी सकारात्मक बातचीत हो रही है। हमारे ऊपर कोई दबाव नहीं है। हम दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। जब तेल की कीमतों में वृद्धि होती है तो उसके गंभीर नतीजे होते हैं। इससे महंगाई बढ़ती है और मंदी आती है। ग्रीन एनर्जी की तरफ भी बदलाव होता है।

जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी समाज को एऊ दर्जा, केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने अमित शाह को दी बधाई

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। गृहमंत्री अमित शाह ने 4 अक्टूबर को जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी समुदाय को अनुसूचित जनजाति यानी

एऊ में शामिल करने का ऐलान किया। रजौरी में एक रैली संबोधित करते हुए शाह ने कहा, आपके साथ अब तक अन्याय हुआ है। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ट्वीट कर पहाड़ी समुदाय को एसटी का दर्जा देने की लंबे समय से लंबित मांग को स्वीकार करने के लिए गृहमंत्री अमित शाह को धन्यवाद दिया। उन्होंने लिखा कि यह केवल पीएम मोदी के नेतृत्व वाली सरकार में संभव हो सकता था, जिसमें जम्मू-कश्मीर को बदलने का साहस और दृढ़ विश्वास हो।

अमेरिका में यहूदियों और उनके प्रार्थनास्थलों पर हमले का खतरा

न्यू जर्सी। अमेरिका में यहूदियों के मंदिरों पर हमला हो सकता है। अमेरिकी जांच एजेंसी फेडरल ब्यूरो ऑफ इंवेस्टिगेशन (इँघ्) ने न्यू जर्सी के सिनेगॉग (यहूदियों के प्रार्थना स?थलों) पर संभावित हमले की आशंका जताई है।

एफबीआई ने संभावित हमले को लेकर अलर्ट जारी करते हुए लोगों से सतर्क रहने की सलाह दी है। हालांकि, अभी तक ये नहीं बताया गया है कि कौन और क?यों यहूदियों के मंदिर पर हमला कर सकता है एफबीआई न्यूयॉर्क ने ट्वीट कर कहा लोगों को चेताया है। ट्वीट में कहा गया है कि न्यू जर्सी में सिनेगॉग प्रार्थना स्थलों को खतरे की विश्वसनीय जानकारी मिली है। ऐसे में वे अपनी और प्रार्थना स्थलों की सुरक्षा के लिए एहतियात बरतें। सावधान रहें और किसी भी आपात स्थिति में पुलिस को तुरंत जानकारी दें। इसके साथ ही एफबीआई ने कहा है कि वो हर खतरे को गंभीरता से लेती है। कानून का पालन कराने वाली एजेंसियों तथा समुदाय के लोगों के के साथ मिलकर एहतियाती कदम उठा रही है।

अमेरिकी हाउस स्पीकर नैंसी पेलोसी के पति को अस्पताल से मिली छुट्टी

वाशिंगटन। अमेरिकी हाउस स्पीकर नैंसी पेलोसी के पति को गुरुवार को अस्पताल से छुट्टी मिल गई। नैंसी पेलोसी ने कहा कि उनके पति पाल पेलोसी को गुरुवार को अस्पताल से इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई। बता दें कि उनके पति के ऊपर पिछले हफ्ते हिंसक हमला किया गया था, जिसमें वह बुरी तरह से घायल हो गए थे, जिसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था पेलोसी ने कहा, 'पाल डाक्टरों की देखरेख में है और वह धीरे धीरे ठीक हो रहे हैं। वह अब घर पर हैं।' अदालत में पेश दस्तावेजों के अनुसार, पाल पेलोसी के ऊपर हथौड़े से हमला किया गया था। इस घटना की वीडियो कैमरों में कैद हो गया था। पाल पेलोसी को जुकरबर्ग सैन फ्रांसिस्को जनरल अस्पताल ले जाया गया। नैंसी पेलोसी ने कहा कि उनके पति 911 ऑपरेटर के आभारी हैं, जिन्होंने पुलिस को आपातकालीन प्रतिक्रियाकर्ताओं और पूरे अस्पताल के कर्मचारियों को बेहतर उपचार के लिए निर्देश दिया।

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री पर हमला

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। गुरुवार को देश और दुनिया में कई ऐसी घटनाएं घटी जिसने सुर्खियां बटोरी। आइए विधानसभा चुनावों की तारीखों का ऐलान कर दिया है। राज्य में दो चरणों में चुनाव कराए जाएंगे और नतीजे 8 दिसंबर को हिमाचल प्रदेश जा रही है। इमरान खान के काफिले पर हमला करने वाले आरोपी ने साफ किया है कि, वो पूर्व प्रधानमंत्री को मौत के घाट उतारने आया था। आज

आज दिन-भर 10 बड़ी खबरों पर एक नजर डालते हैं। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान पर हमले की खबर सामने आई है। समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक एक रैली के दौरान उनके काफिले पर गोलीबारी हुई है। वहीं दूसरी तरफ चुनाव आयोग ने आज प्रेस कॉन्फ्रेंस कर गुजरात चुनाव के साथ ही घोषित होंगे। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान पर हमले की खबर सामने आई है। समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक एक रैली के दौरान उनके काफिले पर गोलीबारी हुई है। फायरिंग के दौरान इमरान खान के पैर में गोली लगने की बात भी सामने आई है। हालांकि उनकी हालत स्थिर बताई शाम पाकिस्तान के गुजरांवाला में इमरान खान एक रैली कर रहे थे। इस दौरान उनके काफिले पर एक युवक ने हमला किया। जिसमें खान के दाहिने पैर में गोली लगी है, लेकिन वो खतरे से बाहर हैं। इस दौरान कई अन्य लोग भी घायल हुए हैं, साथ ही आरोपी को मौके से गिरफ्तार कर लिया गया है।

इमरान खान पर हुए हमले को लेकर भारत की प्रतिक्रिया, कहा- पूरे मामले पर हमारी नजर

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। पाकिस्तान में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान पर जानलेवा हमला हुए है। घटना को लेकर शरीफ की चीन यात्रा को लेकर जारी संयुक्त बयान में जम्मू-कश्मीर को अनुचित संदर्भ शामिल किया गया है। उन्होंने साफ किया कि, जम्मू-

भारतीय विदेश मंत्रालय ने प्रतिक्रिया दी है। एमईए के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने प्रेस कांफ्रेंस के दौरान कहा कि, भारत पूरे वाक्ये पर नजर बनाए हुए है। बागची ने कहा कि यह एक हालिया घटना है, भारत पूरे मामले पर करीब से नजर बनाए हुए है। घटनाक्रम की लगातार निगरानी की जा रही है। प्रेस वार्ता के दौरान बागची ने कहा कि, पाक प्रधानमंत्री शहबाज कश्मीर और लद्दाख भारत का अभिन्न और अविभाज्य हिस्सा हैं और हमेशा रहेंगे। वहीं, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे को लेकर भी बागची ने भारत का विरोध दर्ज कराया है। उन्होंने कहा कि, जहां तक चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे का सवाल है, हमने लगातार चीन और पाकिस्तान को अपने विरोध और चिंताओं से अवगत कराया है।

भारत की सुरक्षा के लिए कितने नुकसानदायक है खस्ताहाल श्रीलंका और पाकिस्तान

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। भारत के पड़ोसी देशों में शामिल श्रीलंका और पाकिस्तान से भारत को चिंता होना स्वाभाविक है।इन दोनों की बर्बादी के पीछे एक ही देश का हाथ है जिसका नाम चीन है। श्रीलंका आर्थिक बदहाली के बाद सबक सीख चुका है लेकिन पाकिस्तान के साथ ऐसा नहीं है। सबकुछ गंवाकर भी पाकिस्तान चीन की ही गोद में बैठना ज्यादा सही समझता है। हाल ही में पाकिस्तान के पीएम शहबाज शरीफ ने चीन की यात्रा की है जिसमें चीन ने पाकिस्तान को सहयोग देने का वादा किया है और इकनामिक कारिडोर में विस्तार लाने की बात कही है। हालांकि इस सीपैक पर भारत की शुरुआत से ही नाराजगी रही है। भारत का कहना है कि ये प्रोजेक्ट भारतीय

हिस्से से होकर गुजर रहा है। जानकार मानते हैं कि श्रीलंका हो या पाकिस्तान दोनों की ही स्थिति भारत के लिहाज से सही नहीं है। रिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक और विदेश मामलों के जानकार कमर आगा का कहना है कि पाकिस्तान की जो स्थिति है उसमें कब एक बड़ा बदलाव हो जाएगा, ये कहपाना काफी मुश्किल है। मौजूदा समय में पाकिस्तान में राजनीतिक स्थिरता दिखाई नहीं देती है। ऐसे में सेना के लिए एक मुफीद हालात बनते जरूर दिखाई दे रहे हैं। इतिहास गवाह है कि पाकिस्तान में सैन्य शासन भारत की सुरक्षा पर हमेशा से ही खतरा रहा है। भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध भी इन्हीं सैन्य शासकों की देन रहा है। आगा का कहना है कि पाकिस्तान का आर्थिक भविष्य पूरी तरह से चीन के हाथों में कैद हो चुका है।

भारत जोड़ो यात्रा में शामिल हुए पूर्व नौसेना प्रमुख एडमिरल रामदास

(आधुनिक समाचार सेवा)
हैदराबाद। पूर्व नौसेना प्रमुख एडमिरल एल रामदास ने गुरुवार को कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा में शामिल होकर तेलंगाना में राहुल गांधी के साथ पदयात्रा की। ललिता रामदास पहले भारतीय नौसेना प्रमुख एडमिरल रामदास कटारी की बेटी हैं। कांग्रेस की तेलंगाना इकाई के अध्यक्ष रेवंत रेड्डी, लोकसभा सदस्य एन उत्तम कुमार रेड्डी और पार्टी के अन्य नेता हुई मुठभेड़ में बलिदान हुए कर्नल संतोष बाबू का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपमान किया है। चीन अब भी भारतीय भूमि पर कब्जा किए हुए है। एक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, 'देश के

एआइसीसी के महासचिव एवं संचार प्रभारी जयराम रमेश ने ट्वीट किया, नौसेना के पूर्व प्रमुख 89 साल की उम्र में भी सार्वजनिक हित के लिए बड़ा काम कर रहे हैं। पूर्व नौसेना प्रमुख ने अपनी पत्नी ललिता रामदास के साथ भारत जोड़ो यात्रा के 57वें दिन राहुल गांधी के साथ भी पदयात्रा में शामिल हुए। राहुल गांधी के नेतृत्व में चल रही इस यात्रा ने 23 अक्टूबर को तेलंगाना में प्रवेश किया था। यात्रा सात सितंबर को तमिलनाडु के कन्याकुमारी से शुरू हुई थी। भारत जोड़ो यात्रा के दौरान राहुल गांधी ने कहा कि चीनी सैनिकों के साथ लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले संतोष बाबू आपको याद हैं। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि संतोष बाबू के बलिदान होने के बाद प्रधानमंत्री ने लोगों से कहा था कि चीन ने भारतीय क्षेत्र का अतिक्रमण नहीं किया है।'

विधायकों की खरीद-फरोख्त में गिरफ्तार लोगों ने चार गैर-भाजपा सरकारें गिराने की योजना बनाई- केसीआर

(आधुनिक समाचार सेवा)
हैदराबाद। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव ने गुरुवार को आरोप लगाया कि टीआरएस विधायकों की खरीद फरोख्त मामले के सिलसिले में गिरफ्तार किए गए लोग उनकी और कांग्रेस शासित राजस्थान सहित चार राज्य सरकारों को गिराने की योजना बना रहे थे। केसीआर न्यायपालिका से लोकतंत्र की रक्षा करने की अपील की है। यहां एक संवाददाता सम्मेलन में राव ने हाल ही में टीआरएस विधायकों की खरीद फरोख्त मामले का जिक्र किया और कथित तौर पर उस प्रकरण से संबंधित एक वीडियो चलाया, जिसमें तीन लोगों को

गिरफ्तार किया गया था। केसीआर ने कहा कि वे खुले तौर पर वीडियो में कहते हैं कि हमने पहले ही आठ (राज्य) सरकारों को हटा दिया है। उन्होंने अभियान को कैसे किया यह भी बताया। पकड़े गए लोगों ने कहा कि अब हम चार सरकारों, यानी तेलंगाना, दिल्ली, आंध्र प्रदेश और राजस्थान की सरकारों को गिराने की प्रक्रिया में हैं। राव ने देश में न्यायिक प्रणाली से आग्रह किया कि देश में लोकतंत्र की रक्षा करने के साथ विधायकों की खरीद-फरोख्त में शामिल लोगों को दंडित किया जाए। मुख्यमंत्री ने पीएम मोदी से अपील की कि इस तरह के राजनीति पर ध्यान दें और इसे खत्म करने का आग्रह किया।

क्या बीजेपी 2024 में ठएम वाईङ्ग फैक्टर के सहारे चुनाव में उतरेगी

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। यूपी और बिहार की राजनीति में ठएम वाई फैक्टरठ की धमक किसी से दबी छुपी नही है । राजनीति में एम-वाई समीकरण का मतलब हमेशा से मुस्लिम-यादव गठजोड़ से रहा है। इसी फ़ार्मूले के बल पर बिहार में लालू प्रसाद यादव ने 1990 में सत्ता हासिल की और साल 2005 तक उनकी पार्टी आरजेडी सत्ता पर काबिज रही। लालकृष्ण आडवाणी की रथ यात्रा को रोककर भी लालू यादव मुस्लिम मतदाताओं की नजर में और चढ़ गए। वहीं यूपी में समाजवादी पार्टी भी पूरी तरीक़े से अब एम-वाई फैक्टर के सहारे है। पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव का मुस्लिम-यादव वोटों पर निर्भरता का अन्दाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है की उन्होंने कुछ दिन पहले ही यूपी

विधानसभा चुनाव में भाजपा और पूरी मशीनरी पर हर सीट से यादवों और मुसलमानों के 20-20 हजार वोट हटवाने के आरोप लगाए थे। उन्होंने कहा था कि पूरी मशीनरी ने मिलकर सपा को मिली हुई जीत को बीजेपी को दिलवाने का काम किया है। दोनो ही मामलों में भाजपा का ड़र दिखाकर मुस्लिम समीकरण मजबूत किया गया।

दुकान में लगी भीषण आग

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। नैनी प्रयागराज स्थित इंडिया होटल के बगल में कपड़े की दुकान और उसके ऊपर कार ऑटो पार्ट्स की दुकान में लगी भीषण आग दमकल की 2 गाड़ियां खाली हो चुकी अभी भी आप पर काबू पाने की कोशिश की जा रही है दमकल की गाड़ियां लगातार आग बुझाने की कोशिश कर रही हैं अभी तक प्राप्त जानकारी के अनुसार करीब-करीब एक करोड़ से ऊपर की संपत्ति का नुकसान श्रीकांत।

कोर्ट ने वार्डवार कमेटी बनाकर दिया रोकथाम का निर्देश हाईकोर्ट में पेश हुए डीएम, नगर आयुक्त और सीएमओ,

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। नगर आयुक्त ने कोर्ट को बताया 2 दिनों के अंदर एंटी लार्वा के छिड़काव की नई मशीन आ जाएगी। इससे फॉगिंग का कार्य तेजी से हो सकेगा। हाईकोर्ट बार के अध्यक्ष आरके ओझा व अन्य वकीलों ने हाईकोर्ट से मॉनिटरिंग का अनुरोध किया। कोर्ट ने इस अनुरोध को मंजूर करते हुए बुधवार को फिर से सुनवाई की बात कही है। प्रयागराज में डेंगू के बढ़ते मामलों पर इलाहाबाद हाईकोर्ट में शुक्रवार को सुनवाई हुई। हाईकोर्ट में डीएम-सीएमओ और नगर आयुक्त पेश हुए। हाईकोर्ट ने मामले में फिर से कड़ा रुख अपनाया है। कोर्ट ने अधिकारियों को मामले में लापरवाही न बरतने का सख्त निर्देश दिया। प्रयागराज में सभी वार्डों में कमेटी गठित कर मानीटरिंग करने का निर्देश दिया। वार्ड के कार्पोरेटर, डॉक्टर, इलाके में रहने वाले वकील,

नगर निगम कर्मचारी व संभ्रांत लोगों को कमेटी में शामिल किया जाए। वार्डवार हालातों की समीक्षा करते हुए जरूरी प्रभावी कदम उठाने का निर्देश दिया। नगर आयुक्त ने कोर्ट को बताया दो दिनों के अंदर एंटी लार्वा के छिड़काव की नई मशीन आ जाएगी। इससे फॉगिंग का कार्य तेजी से हो सकेगा। हाईकोर्ट बार के अध्यक्ष आरके ओझा व अन्य वकीलों ने हाईकोर्ट से मॉनिटरिंग का अनुरोध किया। कोर्ट ने इस अनुरोध को मंजूर करते हुए बुधवार को फिर से सुनवाई की बात कही है। बुधवार नौ नवंबर को मामले की अगली सुनवाई होगी। डेंगू के बढ़ते मामलों पर हाईकोर्ट ने मामले में स्वतः संज्ञान लिया है। हाईकोर्ट ने इससे पहले सुनवाई कर अफसरों को कड़ी फटकार लगाई थी। हाईकोर्ट की फटकार के बाद सूबे के चीफ सेक्रेट्री और डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक प्रयागराज पहुंचे। यहां आकर अधिकारियों के साथ बैठक कर उन्हें जरूरी दिशा निर्देश दे चुके हैं। यूपी में प्रयागराज जिले में हैं डेंगू के सबसे ज्यादा मामले हैं। जिले में अब तक तकरीबन एक हज़ार लोगों की एलाइजा रिपोर्ट पॉजिटिव आ चुकी है। इसके साथ ही छह लोगों की मौत भी हो चुकी है। चीफ जस्टिस राजेश बिंदल और जस्टिस जेजे मुनीर की डिवीजन बेंच में मामले की सुनवाई हुई।

यमुनापार में भौतिक चिकित्सा के क्षेत्र में लक्ष्य फिजियोथेरेपी सेंटर की नई शाखा का शुभारंभ

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। यमुनापार में भौतिक चिकित्सा के क्षेत्र में लक्ष्य फिजियोथेरेपी सेंटर की नई शाखा

का शुभारंभ शुक्रवार को भव्य तरीके से संपन्न हुआ ,संस्था के निदेशक डॉ प्रितांशु श्रीवास्तव जो कि प्रयागराज के जाने-माने फिजियोथैरेपिस्ट हैं ने बताया कि भौतिक चिकित्सा के क्षेत्र यमुनापार वासियों के लिए विविध तरीकों से नई आधुनिक मशीनों द्वारा किया जाएगा पहले दिन ही सेंटर पर इलाज के लिए क्षेत्र के एक दर्जन से अधिक पैरालिसिस, अर्थराइटिस एवं हड्डी से जुड़े मरीजों ने अपना इलाज कराया क्लीनिक का उद्घाटन लक्ष्य सामाजिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठान की संरक्षक श्रीमती माधुरी वर्मा के कर कमलों से किया गया । यह जानकारी लक्ष्य फिजियोथैरेपी सेंटर के निदेशक डॉ प्रितांशु श्रीवास्तव ने दी उन्होंने बताया कि उनके द्वारा हाल ही के दिनों में विश्व स्तर के कई मेडिकल कॉन्फ्रेंस अटेंड कर भौतिक चिकित्सा में नई तकनीकों को शामिल कर नैनी वासियों के लिए एक नया केंद्र खोला गया है ,जिसमें आधुनिक मशीनों एवं तकनीकों द्वारा इलाज किया जाएगा। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार श्री राजीव वर्मा ,श्री देवाशीष श्रीवास्तव , डॉक्टर राहुल तिवारी,डॉक्टर विष्णु दत्त तिवारी, आदि मौजूद रहे।

डिप्टी सीएम मृतक के परिजनों को सपा नेताओं के साथ देख भड़के

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक का शुक्रवार को प्रयागराज आगमन था।उन्होंने खराब प्लेटलेट्स चढ़ाने से मृत प्रदीप पांडेय के परिजनों से भेंट की। लेकिन उनके साथ सपा नेताओं को देख भड़क गए। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक सर्किट हाउस में थे जब मृतक प्रदीप पांडेय के आश्रित वहां आए। इससे पहले ही परिवार के सदस्य ग्लोबल अस्पताल के मालिक की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सीएमओ कार्यालय में आत्मदाह का प्रयास कर चुके थे।

न्यायालय के आदेशों पर अभियुक्त के विरुद्ध धारा 82 का इश्तहार जारी

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। बारा प्रयागराज के क्षेत्राधिकारी संतलाल सरोज बारा थाना प्रभारी अनिल कुमार वर्मा ने बताया वि मु0अ0सं0 136/2021 धारा 452,376डी,504,506,323 भादवि0 व 3(2)5 एससी / एसटी एक्ट थाना बारा जनपद प्रयागराज से सम्बन्धित आरोपीगण 1.राघवेन्द्र सिंह पुत्र इन्द्रजीत सिंह, 2.विजयपाल सिंह पुत्र अशर्फी लाल, 3.अखिलेश सिंह पुत्र रामजी सिंह व 4.दीपक सिंह पुत्र राजेन्द्र सिंह निवासीगण भेलाव थाना बारा जनपद प्रयागराज के गिरफ्तार न होने पर दिनांक 14.10.2022 को मा0 न्यायालय विशेष न्यायाधीश एससी / एसटी एक्ट इलाहाबाद द्वारा अन्तर्गत धारा 82 द0प्र0सं0 का इश्तहार जारी किया गया है । अभियुक्तगण के विरुद्ध मा0 न्यायालय से प्राप्त धारा 82 द0प्र0सं0 के इश्तहार का तामिला दिनांक 15 10 2022 को किया जा चुका है किन्तु अभियुक्तगण मा0 न्यायालय में हाजिर नही हो रहे हैं। अभियुक्तगण लगातार फरार चल रहे हैं। हाजिर न होने की दशा में अग्रिम विधिक कार्यवाही की जायेगी।

छात्रिय स्वर्णकार युवक समिति दरियाबाद प्रयागराज द्वारा किया गया भव्य प्रेस कॉन्फ्रेंस

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। स्वर्ण कार समाज के समस्त पदाधिकारी एवं महिला शक्तियों व व्यापारियों, अतिथियों के बीच एक भव्य बैठक सम्पन हुई। यह कार्यक्रम का नेतृत्व श्रीमती रचना वर्मा पूर्व अध्यक्ष महिला शक्ति के के द्वारा सम्बोधित करते हुये छेत्र वासियों एवं प्रयागराज वासियो व देशवासियों को दिया गया शुभ सन्देश। जिसमे चुनाव को लेकर मा रोहित वर्मा (गुलाव जी)को अध्यक्ष पद के लिए खड़ा किया गया हैं वहीं सभी विषयों और मुद्दों पर जनचर्चा करते हुये पत्रकार व मीडिया साथियों के सामने सारी बातो को रखते हुये प्रेस विज्ञप्ति की गयी। जिसमे चुनाव को लेकर रूप रेखा तैयार करते हुये एक नई दिशा देते हुये छत्रिय स्वर्ण कार युवक समिति के नेतृत्व मे चुनाव की रणनीतिया तैयार करते हुये समाज को नई दिशा देकर कार्यभार को सँभालते हुये अग्रिम कार्यवाही करते हुये चुनाव पद की दावेदारी किया गया हैं साथ ही पिछले कार्यक्रमों को भी अवगत करवाया की हमारी समिति के द्वारा समय समय पर क्या कार्य किये जाते हैं गरीबों, मजलूमों, बेवस, विधवा, असहाय, वृद्धाओ, अनाथों और विकलंगो व गरीब परिवारों को लेकर, सादी विवाह सम्मेलन व कम्बल वितरण एवं माघ मेला व कोरोना

काल जैसी आपदाओ मे मदद करती रहती हैं यह समिति और करती रहेंगी चाहें वह धर्मशाला हो या कोई कार्यक्रम गरीब परिवारों की सदैव मदद होंगी। 3 पदाधिकारीयों मे पहले अध्यक्ष पद की दावेदारी किया हैं रोहित वर्मा गुलाब जी हैं जिनका चुनाव चिन्ह (बस)हैं। दूसरे पदाधिकारी नितिन स्वर्ण कार ज्ञान टंच महामंत्री पद के लिए किया दावेदारी इनका चुनाव चिन्ह (नल)हैं। तीसरे पदाधिकारी शिवम् सोनी कोषाध्यक्ष पद के लिए किया हैं दावेदारी इनका चुनाव चिन्ह हैं (बल्फ) यह समिति का चुनाव होने जा रहा हैं। वहीं मंच मे उपस्थिति सभी पदाधिकारियों के सामने श्रीमती रचना वर्मा पूर्व अध्यक्ष जी ने अवगत करवाया, वहीं साथ निभाया कमेटी के वरिष्ठ संरक्षक मा, शिवशंकर वर्मा जी ने और सहयोग प्रदान किया सभी सहयोगी साथियों ने कार्यक्रम मे आये हुये पदाधिकारी गण सुरेश चंद्र, अजीत सोनी, गोपाल जी वर्मा, श्याम जी वर्मा, अवधेश वर्मा व दिनेश हेमकार, रामबालक प्रधान, गोपीनाथ स्वर्ण कार एवं अनेकों पदाधिकारियों के साथ सदस्य व अतिथि भव रहें मौजूद साथ ही सभी मीडिया पत्रकार साथी मौजूद रहें सभी का स्वागत और अभिनन्दन करते हुये समापन किया गया।

एनकाउंटर स्पेशलिस्ट आईपीएस अजय पाल शर्मा को हार्ट अटैक, मेदांता में भर्ती

(आधुनिक समाचार सेवा)
लखनऊ। यूपी कैडर के चर्चित आईपीएस अफसर एनकाउंटर स्पेशलिस्ट अजय पाल शर्मा को हार्ट अटैक के कारण राजधानी लखनऊ के मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अजय पाल शर्मा को गुरुवार रात हार्ट अटैक आने के कारण अस्पताल में भर्ती किया गया था।अब उनकी हालत स्थिर बतायी जा रही है।ंपीएस अफसर अजय पाल शर्मा की तबीयत गुरुवार को कार्यालय में काम के दौरान खराब हुई।बताया जा रहा है कि काम के दौरान दिन में ही उनके सिर में दर्द हो रहा था।इसके बाद रात में उनकी हालत ज्यादा खराब हुई।इसके बाद उन्हें मेदांता अस्पताल ले जाया गया,जहां पर जांच में हार्ट अटैक की बात सामने आयी। मेदांता अस्पताल के मीडिया प्रभारी डॉ. आलोक कपूर ने बताया कि आईपीएस अधिकारी अजय पाल शर्मा को माइनर हार्ट अटैक आया है।इस वजह से उन्हें यहां भर्ती किया गया था।माइनर हार्ट अटैक आने के कारण उनकी एंजियोप्लास्टी की गई है।अब उनकी तबियत पहले से बेहतर है।डॉक्टर कपूर ने बताया कि एंजियोप्लास्टी डॉक्टर पीके गोयल की निगरानी में की गई है।फिलहाल आईपीएस अजय पाल शर्मा की तबियत ठीक है और उन्हें कल डिस्चार्ज किया जाएगा। दिल पर अत्यधिक दबाव सेहत पर पड़ता है भारी केजीएमयू के हृदय रोग विशेषज्ञ प्रो. डॉ. अरविंद मिश्रा के मुताबिक अनियमित दिनचर्या,

वसायुक्त ज्यादा भोजन खाने और नियमित व्यायाम नहीं करने के कारण हमारी रक्त धमनियों में कोलेस्ट्रोल का स्तर बढ़ जाता है और रक्त का फ्लो प्रभावित होता है।दिल को रक्त पहुंचाने वाली धमनियां ज्यादा कोलेस्ट्रोल के कारण सिकुड़ने लगती हैं तो दिल पर ज्यादा दबाव आने लगता है और अंततः हार्ट अटैक जैसी बीमारी हो जाती है। खतरा कम करने को इन बातों का रखें ध्यान चिकित्सकों के मुताबिक आज बीमारियों का खतरा काफी हद तक बढ़ चुका है। ऐसे में सभी लोगों को समय-समय पर अपनी स्वास्थ्य जांच कराते रहना चाहिए, ताकि आने वाली समस्या का समय रहते पता चल सके।यदि शरीर में किसी बीमारी के होने के लक्षण नजर आते हैं तो समय रहते इलाज करके उसे खत्म किया जा सकता है।दिल को स्वस्थ रखने के लिए धूम्रपान से दूरी बनाना, खानपान का ध्यान रखना, अत्यधिक वसायुक्त भोजन से परहेज व पौष्टिक आहार लेना तथा तनाव न लेना मददगार साबित हो सकता है। आपको बता दें कि अजय पाल शर्मा वर्तमान में यूपी 112 में बतौर एसपी तैनात हैं।मूल रूप से पंजाब के लुधियाना के रहने वाले अजय पाल शर्मा 2011 बैच के आईपीएस अफसर हैं।अजय पाल शर्मा की पहली पोस्टिंग सहारनपुर में हुई थी।अजय पाल शर्मा की गिनती यूपी के तेज तर्रार पुलिस अफसरों में होती हैं।अजय पाल शर्मा ने 100 से ज्यादा एनकाउंटर किया है। योगी सरकार के पहले कार्यकाल में अजय पाल शर्मा को नोएडा में पोस्टिंग दी गई थी।अजय पाल शर्मा ने जून 2019 में रामपुर में एक 6 वर्षीय बच्ची से रेप और हत्या के आरोपी नाजिल को एनकाउंटर में गिरफ्तार किया था,जिसके बाद आईपीएस अजय पाल ने चर्चा और खूब तारीफ बंटोरी थी। आईपीएस अजय पाल शर्मा के नेतृत्व में ही 60 हजार के इनामी बदमाश नौशाद उर्फ डैनी और 12 हजार के इनामी सरवर को पुलिस ने ढेर किया था।कैराना में पलायन के लिए जिम्मेदार मुकीम काला गैंग के 50 हजार के इनामी अपराधी फुरकान को अजय पाल शर्मा ने ही गिरफ्तार कर जेल भेजा था। नोएडा एसएसपी रहने के दौरान अजय पाल शर्मा का कथित रूप से वीडियो वायरल हुआ था। इसके बाद आईपीएस अजय पाल शर्मा को नोएडा से हटा दिया गया था,फिर रामपुर का एसपी बना दिया गया था। रामपुर एसपी रहने के दौरान ही निलंबित आईपीएस वैभव कृष्ण की एक रिपोर्ट में अजय पाल शर्मा का नाम आ गया था, जिसके बाद अजय पाल शर्मा को रामपुर से हटा दिया था। इसके बाद से अजय पाल शर्मा को किसी जिले की कमान अभी तक नहीं मिली।

श्रृंगवेरपुर धाम में 5 दिवसीय राष्ट्रीय रामायण मेले का शुभारम्भ, डिप्टी सीएम ने मां गंगा की पूजन एवं आरती की

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। श्रृंगवेरपुर धाम में शुक्रवार को 5 दिवसीय 33वें राष्ट्रीय रामायण मेले का उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक, जगतगुरू रंगरामानुजाचार्य स्वामी श्रीधराचार्य जी महाराज, पूर्व केन्द्रीय कैबिनेट मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने दीप प्रज्जवलन कर शुभारम्भ किया। साधु महात्माओं ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ मां गंगा का पूजन एवं आरती की। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक ने कहा कि श्रृंगवेरपुर धाम एक ऐतिहासिक एवं हमारी संस्कृति से जुड़ी हुई धरती है। उन्होंने कहा कि यह धरती सामाजिक समरसता की एक मिसाल है। सरकार के द्वारा सांस्कृतिक विरासत वाले स्थलों को विकसित करने का कार्य किया जा रहा है। श्रृंगवेरपुर धाम को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस अवसर पर पूर्व केन्द्रीय कैबिनेट मंत्री मुख्तार अब्बास नकवीं ने श्रृंगवेरपुर धाम के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि यह स्थान रामराज की संकल्पना का सार्थक सबक है, जहां से भगवान श्रीराम ने समरसता का संदेश दिया था। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में देश एवं प्रदेश विकास के पथ पर तेजी से

आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि केन्द्र एवं राज्य सरकार ने क्राइम फ्री, कमीशन फ्री एवं करप्शन फ्री की व्यवस्था की सौगात दी है जिसके बदौलत हमारा देश बड़े से बड़े संकटों का सामना करने में समर्थ हो सका है। मंत्री मत्स्य विभाग संजय कुमार निषाद ने श्रृंगवेरपुर धाम के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि यह धरती सामाजिक समरसता की एक मिसाल है। इस अवसर पर प्रख्यात कथावाचक श्री देवकी नंदन ठाकुर जी महाराज ने श्रृंगवेरपुर धाम के ऐतिहासिक महत्व के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि यह वह स्थान है, जहां भगवान श्रीराम ने यह संदेश दिया कि कोई छोटा-बड़ा नहीं होता है, जिनके हृदय पवित्र होते है, हम उनको अपना मित्र बना सकते है और उन्हें गले लगा सकते है। इस अवसर पर राष्ट्रीय रामायण मेला से सम्बंधित स्मारिका का विमोचन भी किया गया। प्रख्यात कथावाचक देवकी नन्दन ठाकुर जी महाराज, मंत्री, मत्स्य विभाग संजय कुमार निषाद, सांसद फूलपुर श्रीमती केशरी देवी पटेल विधायक फाफामऊ गुरू प्रसाद मौर्य, राष्ट्रीय रामायण मेला आयोजन समिति के अध्यक्ष बालकृष्ण पाण्डेय, महामंत्री उमेश चन्द्र द्विवेदी सहित अन्य जनप्रतिनिधिगणों के अलावा काफी संख्या में लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन रामायण मेला समिति के महामंत्री श्री उमेश चन्द्र द्विवेदी ने किया।

हरि प्रबोधिनी एकादशी 2022 : चातुर्मास का कार्तिक शुक्ल एकादशी पर समापन तुलसी विवाह के आयोजन शुरू

(आधुनिक समाचार सेवा)

वाराणसी। कार्तिक शुक्ल एकादशी तद्नुसार शुक्रवार को श्रीहरि क्षीर सागर में योग निद्रा से जाग गए।

इसके साथ ही आषाढ़ शुक्ल एकादशी (10 जुलाई) से चल रहे चातुर्मास का समापन भी हो गया। मांगलिक कार्यों का भी आरंभ इसी के साथ शुरू हो गया है। कार्तिक शुक्ल एकादशी तिथि तीन नवंबर की रात 8.50 बजे लग गई जो चार नवंबर को शाम 7.02 बजे तक रहेगी। हरि प्रबोधिनी एकादशी व चातुर्मास व्रत का पारन पांच नवंबर को किया जाएगा। तुलसी विवाह के विधान भी पांच नवंबर को ही पूरे किए जाएंगे। शुक्रवार की सुबह से ही काशी में गंगा तट पर देवों के निमित्त अनुष्ठान और पूजन के साथ ही विष्णु की पूजा और अर्चना का दौर शुरू हो गया। सुबह से ही गंगा में स्नान ध्यान के साथ ही तट पर पूजा और दान पुण्य का दौर शुरू हो गया। आस्था के स्वरों में हर हर महादेव और हर हर गंगे के साथ ओम नमो भगवते वासुदेवाय के वर भी गुंजायमान हो गए। कई स्थानों पर भागवत पाठ कर प्रसाद भी वितरित किया गया। सौभाग्यादि इस व्रत के निमित्त काम-क्रोधादि त्याग कर क्षमा-दया व उदारता युक्त हो सोने-चांदी की लक्ष्मी नारायण की मूर्ति बनवा कर वेदी पर स्थापित करनी चाहिए। ऋतु फल, मिष्ठान, गंध-पुष्प, धूप-दीप व नैवेद्यादि से पूजन कर पांच दिनों तक व्रत रहना चाहिए। पद्म पुराण का श्रवण व वाचन आदि करना चाहिए। पूजन के पहले दिन भगवान के हृदय का कमल पुष्प से, दूसरे दिन कटि प्रदेश का बिल्व पत्र से, तीसरे दिन घुटनों का केतकी पुष्प से, चौथे दिन चरणों का चमेली पुष्प से, पांचवें दिन संपूर्ण अंगों का तुलसी पत्र से पूजन-वंदन करना चाहिए। इससे श्रीहरि सहित माता लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और सुख-सौभाग्य-वैभव का आशीर्वाद प्रदान करती हैं।

चंदौली में पोखरे में उतराया मिला अज्ञात व्यक्ति का शव

(आधुनिक समाचार सेवा)

चंदौली। चंदौली जिला मुख्यालय स्थित नरसिंहपुर खुर्द पोखरे में शुक्रवार की सुबह 40 वर्षीय अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने की जानकारी होने के बाद मौके पर ग्रामीणों की भारी भीड़ लग गई। वहीं ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोखरे से शव को निकलवाया और शिनाख्त करने की कोशिश की। काफी मशक्कत के बाद भी दोपहर तक उसकी पहचान नहीं हो सकी थी। वहीं शिनाख्त न हो पाने की सूरत में पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया। मृतक के पास से ऐसी कोई चीज नहीं मिली जिससे उसकी शिनाख्त हो सके। बहरहाल पुलिस शव की शिनाख्त कराने में जुट गई है। पुलिस के

अनुसार शिनाख्त का प्रयास किया जा रहा है। पहचान होने के बाद ही विधिक कार्रवाई आगे बढ़ सकेगी। स्थानीय लोगों के अनुसार सुबह पोखरे के पास आसपास के लोग टहल रहे थे। इसी बीच किसी की निगाह पोखरे में उतराए हुए शव पर पड़ी। लोगों ने इसकी जानकारी अन्य लोगों को दी। शव मिलने की जानकारी होते ही पोखरे के पास लोगों की भीड़ एकत्रित हो गई। किसी ने पुलिस को सूचना दी। कुछ देर में पुलिसकर्मी मौके पर पहुंच गए। लोगों के मदद से शव को बाहर निकाला गया। मृतक के शरीर पर खादी रंग का शर्ट व काले रंग का पैंट था। शव को देखकर यह लग रहा था कि रात के समय वह तालाब में गिर गया होगा। चर्चा यह भी रही कि व्यक्ति को किसी ने तालाब में फेंक दिया होगा।

आजमगढ़ के जहानागंज कस्बे में लगा पाकिस्तान जिंदाबाद का नारा जांच के बाद कार्रवाई की तैयारी

(आधुनिक समाचार सेवा)

आजमगढ़। नगर निकाय चुनाव की तिथि अभी घोषित नहीं है लेकिन भावी प्रत्याशी चुनावी मूड में आ गए हैं। इसके लिए वाह तरह-तरह के हथकंडे अपनाने लगे हैं। नगर पंचायत जहानागंज की गलियों में

लगे पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे से जिला एक बार फिर चर्चा में आ गया है। जहानागंज नगर पंचायत में एक प्रत्याशी के समर्थकों ने गुरुवार की रात नगर की गलियों में गर्दन में नीला पट्टा लगाए पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाते रहे। इसका वीडियो भी इंटरनेट मीडिया पर वायरल हो गया। इससे जानता में आक्रोश व्याप्त है। इस मामले की जानकारी होने के बाद जिला प्रशासन जांच के बाद कार्रवाई की तैयारी में जुट गई है। चेयरमैन पद की तैयारी में लगे पप्पू मुफीद नगर में अपने समर्थकों के साथ बैठक किए। इसके बाद नगर की गलियों में जुलूस की शक्ल में जिंदाबाद के नारे लगाते हुए समर्थकों संग भ्रमण करने लगे। इसी बीच समर्थकों ने नगर की गलियों में गुजरते समय पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाने लगे। यह देखकर लोग काफी अचंभित भी हुए। इंटरनेट मीडिया पर इसका वीडियो भी जमकर वायरल हो रहा है। जिला कभी आतंकी संगठनों के गतिविधियों व कभी माफियाओं के गठजोड़ से चर्चा में रहा है। अब पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे से फिर चर्चा में आ गया है। जहानागंज इंस्पेक्टर प्रमेंद्र सिंह ने कहा कि इंटरनेट मीडिया पर वायरल वीडियो की जांच की जा रही है। सत्यता प्रमाणित होने पर कार्रवाई की जाएगी। बसपा विधानसभा इकाई अध्यक्ष श्री राम ने बताया कि भावी प्रत्याशी पार्टी के अधिकृत नहीं हैं और ना ही वह बसपा के सदस्य हैं।

आप भी हो जाएं सावधान बाइक की डिग्गी में रखा रुपया कहीं से नहीं है सुरक्षित

(आधुनिक समाचार सेवा)

जौनपुर। जिले में अगर आप अपनी बाइक में कुछ भी रखकर उसे सुरक्षित मान रहे हैं तो यह चौंकाने वाली खबर आपके होश उड़ा देगी। आप अपनी बाइक की डिग्गी में कुछ

रखकर अगर लॉक करके थोड़ी ही देर के लिए नजर हटाएंगे तो कब चोर उचक्के वह रकम पार कर देंगे आपको कुछ पता भी नहीं चलेगा। ऐसा ही एक मामला जिले के गौराबादशाहपुर में शुक्रवार को सामने आया। पीड़ित के अनुसार गौराबादशाहपुर नगर में शुक्रवार को लगभग बारह बजे बैंक से रुपये निकालकर डिग्गी में रखने के बाद रेस्टोरेंट में बैठकर नाश्ता करने लगा था। इस दौरान किसी समय उचक्के ने बाइक की डिग्गी का लाक तोड़ दिया। लाक तोड़ने के बाद उसमें रखे हुए एक लाख रुपये को लेकर वह किस समय फरार हो गया इसकी जानकारी भी नहीं हो सकी। वहीं वारदात का शिकार व्यक्ति हक्का-बक्का होकर शोर मचाता ही रह गया और उचक्का नौ दो ग्यारह हो गया। कुकुहां निवासी अनमोल कुमार दुबे स्टेट बैंक गौराबादशाहपुर में पैसे निकालने आया था। जहां से पैसे निकालने के बाद कुछ पैसे जेब में रखकर एक लाख रुपये उसने अपने बाइक की डिक्की में रखकर लाक कर दिया। इसके बाद पत्नी और बच्चों के साथ बैंक से थोड़ी दूर स्थित एक रेस्टोरेंट में सड़क के किनारे बाइक खड़ी करके नाश्ता करने चला गया। भुक्तभोगी के अनुसार थोड़ी ही देर में उसके गाड़ी के बगल में एक पल्सर पर सवार दो लोग आकर रुके और उसके डिग्गी का लाक तोड़ने लगे। जब तक वह दौड़कर शोर मचाता तब तक डिग्गी का लाक तोड़कर बैग में रखे एक लाख रुपये तथा चेक बुक लेकर फरार हो गए। भुक्तभोगी की सूचना पर पहुंचे गौराबादशाहपुर चौकी इंचार्ज रामजी सैनी ने जगह-जगह वाहन चेकिंग कर जांच पड़ताल में लगे हैं।

आजमगढ़ में एटीएस की छापेमारी के बाद फरार काजी गन हाउस संचालक पर 25 हजार रुपये का इनाम घोषित

(आधुनिक समाचार सेवा)

आजमगढ़। जिले में एटीएस की छापेमारी में बिलरियागंज में पकड़ी गई अवैध असलहे की खेप और कारतूस तस्करी का मामला ने गन हाउस को पहले ही सील कर दिया है। इस मामले में पहले ही तीन आरोपितों को गिरफ्तार किया जा चुका है।26 अक्टूबर को यूपी एटीएस ने आफताब आलम आफताब आलम तथा काजी गन हाउस आसिफगंज पांडेय बाजार रोड के संचालक सैयद काजी अरशद के माध्यम से पूर्वांचल के विभिन्न जिलों में तस्करी करता था।

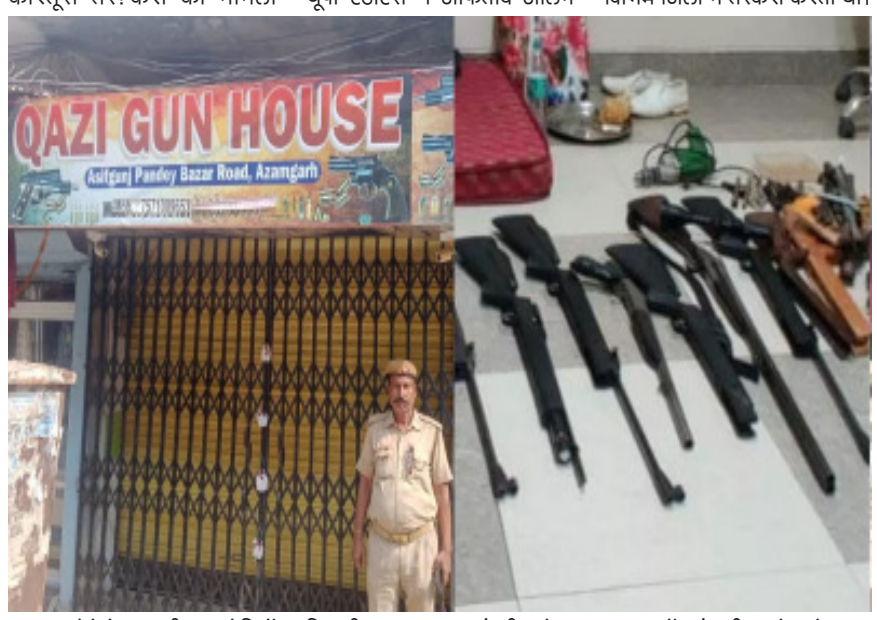

उजागर होने के बाद तीन आरोपितों की गिरफ्तारी हो चुकी है। वहीं संलिप्तता की जानकारी होने के बाद जिला प्रशासन ने गन हाउस को सील कर दिया है। बिलरियागंज थाना के पतिला गौसपुर व फलाह नगर में भारी संख्या में असलहों की बरामद के मामले में फरार काजी गन हाउस संचालन पर पुलिस अधीक्षक अनुराग आर्य ने 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया है। साथ ही उसकी तलाश के लिए स्वाट टीम को लगाया है। असलहों की सप्लाई में यह लाइसेंसी गन हाउस सेतु का काम करता था। प्रशासन निवासी फलाहनगर व मैनुद्दीन शेख निवासी पतिला गौसपुर, बिलरियागंज को गिरफ्तार किया था। दोनों के घरों से भारी मात्रा में अवैध हथियार, कारतूस व उपकरण आदि बरामद हुए थे। एटीएस की पूछताछ में मैनुद्दीन शेख ने बताया था कि वह धंधे को काफी दिनों से कर रहा है। देवारा क्षेत्र के कुड़ही ढाला के पास इब्राहिमपुर गांव में अपने खेत में अवैध हथियार बनाने हेतु एक कारीगर को रखते हुए फैक्ट्री लगाई थी। बाढ़ आने पर फैक्ट्री को बंद कर सामान घर में रखता था। हथियारों को जांच में मैनुद्दीन के नेपाल, पाकिस्तान व दुबई तक कनेक्शन प्राप्त हुए हैं। एटीएस को तलाशी के दौरान आरोपितों के घरों से बंदूक, रिवाल्वर व अत्याधुनिक हथियार पेन गन बरामद हुआ है। पुलिस तीन नवंबर को हथियार बनाने वाले कारीगर बच्चेलाल विश्वकर्मा निवासी बम्हौर, मुबारकपुर को असलहा बनाने के उपकरण के साथ मधनापार तिराहे से गिरफ्तार किया था। पुलिस अधीक्षक अनुराग आर्य ने बताया कि गन हाउस संचालक की गिरफ्तारी के लिए संभावित ठिकानों पर दबिश दी जा रही है।

आजमगढ़ के राजबली यादव ने मुलायम सिंह यादव की तैयार की प्रतिमा

(आधुनिक समाचार सेवा)

आजमगढ़। सोशल मीडिया पर इन दिनों पूर्व मुख्यमंत्री स्व. मुलायम सिंह यादव की एक मूर्ति और मूर्तिकार की तस्वीर वायरल हो रही है। मूर्ति को बनाने वाले राजबली यादव आजमगढ़ जिले के रहने वाले मूर्तिकार हैं। वह काफी समय से मुलायम सिंह यादव के मुरीद भी रहे हैं। ऐसे में उनके निधन के बाद उन्होंने मूर्ति बनाने की तैयारी शुरू की जो अब बनकर पूरी तरह तैयार है और खूब वायरल भी हो रही है। इसे समाजवाद के

प्रति समर्पण कहें या नेता जी से लगाव का नतीजा कि लखनऊ विश्वविद्यालय से एमएफए पास राजबली यादव ने न केवल मुलायम सिंह की प्रतिमा बना डाली, बल्कि उसे गांव में लगाने की कोशिश में जुटे हैं। लालगंज ब्लाक के रणमो गांव निवासी राजबली यादव ने वर्ष 2002 में लखनऊ विश्वविद्यालय से मास्टर आफ फाइन आर्ट की डिग्री अपने ताऊ के पुत्र लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर व पूर्व दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री लालजी अहीर की देखरेख में हासिल की।घर लौटे तो 2006-07 में पिकनिक स्पाट कुकरैल के लिए 50 फीट का घड़ियाल बनाया। उसके बाद से घर पर रहकर मूर्ति बनाने का कार्य शुरू किए जिसमें पिताजी की मूर्ति, कई महात्मा, पंचमुखी शंकरजी, काली जी, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, विवेकानंद, डा. आंबेडकर, महात्मा गांधी आदि सैंकड़ों मूर्ति बना डाली। राजबली ने बताया कि नेताजी के निधन के बाद मन में एक भाव जगा कि नेताजी की मूर्ति तैयार कर अपने गांव में लगवा दूं। उसके बाद नेताजी की एक सात फीट व एक ढाई फीट की मिट्टी की मूर्ति तैयार कर दिया। मिट्टी की मूर्ति तैयार होते ही समाजवादी पार्टी के कई नेताओं व कार्यकर्ताओं का मूर्ति खरीदने के लिए फोन आने लगा। एक सीमेंट की मूर्ति या धातु की मूर्ति तैयार करने में डेढ़ से दो महीने का समय लगता है। फिलहाल नेता जी के नाम पर व्यवसाय का इरादा अभी नहीं है। प्रयास कर रहा हूं कि पहले गांव में मूर्ति स्थापित करने की जगह और प्रशासन की अनुमति मिल जाए।

सीधे प्रवेश
100% Placement
15% Fee Concession
नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र
(भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)
(पहले आओ पहले पाओ)
❖ प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को रोजगार पाने का पूर्ण अवसर
❖ हाइस्कूल में 60% से उपर अंक लाने वाले छात्रों को प्रशिक्षण शुल्क में 15% प्रतिशत की छूट दी जायेगी।

➢ कम्प्युटर आपरेटर (कोपा)
➢ डेटा इंट्री आपरेटर
➢ फायर सेफ्टी
➢ कम्प्युटर टीचर ट्रेनिंग
➢ इलेक्ट्रीशियन
➢ सीएनसी प्रोग्रामिगं
➢ इलेक्टिक मैकैनिक
फिटर
वेल्डर
सीसीए
रेफ्रीजरेटर एवं ए.सी.
सिक्योरिटी सर्विस
बेसिक कम्प्युटर
कम्प्युटर हाडवेयर

Apply Online: www.nainiti.com
Mail us at – info@nainiti.com
प्रवेश हेल्पलाइन नं0
8081180306 , 9415608710 , 8103021873
⇨ इण्डियन कॉफी हाउस के सामने तुलसीयानी प्लाजा , तीसरी मंजिल , सिविल लाइन , प्रयागराज।

क्षेत्र पंचायत की खुली बैठक में 3.5 करोड़ की कार्ययोजना का मांगा प्रस्ताव, नई योजनाओं पर होगा काम

(आधुनिक समाचार सेवा)

गाजीपुर। क्षेत्र पंचायत की खुली बैठक गुरुवार को विकासखंड के सभागार में हुई। आगामी वित्त वर्ष में नई योजनाओं पर काम किया जाना है। इस पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया। सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का अंतर्गत वर्ष 2023-24 की कार्य योजना एवं मनरेगा के कार्य योजना एवं लेबर बजट बनाने पर विचार गया गया। 15वां वित्त आयोग की योजना पर विचार कृषि कार्यक्रम, पशु पालन, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन योजना पर विचार किया गया। पंचम राज्यवित्त, 15वां

वित्त आयोग की योजना पर विचार किया गया। कुल 85 नए प्रस्ताव सदस्यों ने सदन के सामने रखे जिसे नई कार्ययोजना में शामिल किया जाएगा। मनरेगा मजदूरों को रोजगार देने की तैयारी पर प्रकाश डालते हुए बीडीओ अरुण कुमार वर्मा ने बताया कि ब्लाक 63 ग्राम पंचायत में शासन के मंशा अनुसार मनरेगा के तहत विकास कार्य चल रहा है।

राज्यमंत्री ने ब्लाइंड सपोर्ट करते हुए आरईएस विभाग को ऑल इज़ वेल कहा

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। जनपद सोनभद्र दौरे के दौरान राज्यमंत्री आरईएस एवं ग्राम्य विकास विजय लछमी गौतम ने अपने विभाग और सरकार को आरईएस विभाग द्वारा विकास के नाम पर भृष्टाचार व कमीशनखोरी का खेल मंत्री विजय लछमी गौतम को नहीं दिखाई पड़ी। जबकि जनपद सोनभद्र का आरईएस विभाग ही बने हुए हैं। साथ ही पैसों का बंदरबांट भी कर लिया गया। आरईएस विभाग द्वारा कमीशनखोरी के लिए भी टेंडर प्रक्रिया में जमकर धांधली की गई। विभाग पूरी तरह से कमीशनखोरी

दूध का धुला बताया। सर्किट हाउस में विभागों की समीक्षा बैठक के दौरान मीडिया के तीखे सवालों पर मंत्री जी डिफेंस करती नज़र आईं। आरईएस विभाग की करतूतों पर लगातार पर्दा डालती नज़र आईं मंत्री जी। पत्रकारों द्वारा किसी ठेकेदार का भुगतान दूसरे को करने पर लिखित में शिकायत करने पर जांच के आदेश की बात कहा मंत्री जी ने। वहीं आधी अधूरी सड़क निर्माण पर भी जांच की बात कही। वेंटिलेटर पर पहुंच चुका है। विभाग कमीशनखोरी के नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। परंतु सम्बंधित मंत्री महोदया को विभाग की कारस्तानी नज़र नहीं आ रही है। यह तो वही मसल हो गई, जानत है मानत नहीं एका चढ़ा है जिन। देखत है देखात नहीं, एका है मोतियाबिंद। जिला खनिज न्यास के मद से आंगनबाड़ी केंद्र का कार्य कराया गया है। परंतु आज तक अधिकांश आंगनबाड़ी केंद्र आधे अधूरे और करप्शन का मकड़जाल बन चुका है। इस पर भी सम्बंधित विभाग की मंत्री को हरा ही हरा दिखाई दे रहा है। बिना जांच के ही मंत्री महोदया ने आंखमूंद कर आरईएस विभाग की सभी कारगुज़ारियों पर मुहर लगा दी। ऐसे में योगी सरकार के ज़ीरो टॉलरेंस की पॉलिसी कैसे सक्सेस हो सकती है। आने वाले समय में आरईएस विभाग की काली करतूतें योगी सरकार के ताबूत में अंतिम कीलें साबित हो सकती हैं।

डेम में डूबने से 58 वर्षीय वृद्ध की हुई मौत

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। चोपन थाना क्षेत्र के चैना टोला में स्थित डैम में एक वृद्ध की डूबने से मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत पनारी के टोला चैना निवासी सगीर उर्फ समीर (58) पुत्र स्व0 नसरत बुधवार की शाम नित्य कार्य के लिए डैम किनारे गया था और काफी समय बीत जाने के बाद घर नही लौटा तो घरवाले खोजबीन करना शरू किए लेकिन अंधेरा होने के कारण कुछ पता नही चल सका और आज बृहस्पतिवार को सुबह किसी के द्वारा डैम में शव की सूचना मिली। परिजनों ने घटना की सूचना चोपन पुलिस को दी सूचना मिलते ही एसआई त्रिभुवन रॉय सहयोगियों के साथ मौके पर पहुंच कर शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम हेतु जिला अस्पताल भेज दिया गया वही लोगों द्वारा बताया जा रहा है कि यह घटना पानी मे डूबने से हुई हैं।

चोरी के सामान के साथ दो अभियुक्तों कि हुई गिरफ्तारी

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। सूर्या होटल के सामने रहने वाले वादी आलोक कुमार तिवारी पुत्र रामचन्द्र तिवारी, अरविन्द जी के किराये के मकान मे, थाना रा0गंज,जनपद सोनभद्र यशवीर सिंह द्वारा सख्त निर्देश दिये गये । उक्त निर्देश के क्रम मे अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) एवं क्षेत्राधिकारी नगर के निकट पर्यवेक्षण एवं नेतृत्व मे दिनांक 02.11.2022 को रॉबट्र्सगंज रामकेश, निवासी कम्हारी, थाना रॉबर्टसगंज, जनपद सोनभद्र उम्र लगभग 34 वर्ष । 2. कमलेश पुत्र मुन्ना, निवासी घुर्मा, थाना रॉबर्टसगंज, जनपद सोनभद्र उम्र लगभ 32 वर्ष । **बरामदगी का**

द्वारा लिखित प्रार्थना पत्र दिया कि अज्ञात व्यक्ति द्वारा वादी के किराये के मकान के बाउण्ड्री से वादी का काले रंग का मो0सा0 पैशन प्रो श्इ53श्इ3769 को चोरी कर लिया गया। जिसके सम्बन्ध मे थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0-0844/2022 धारा 379 भा0द0वि0 बनाम अज्ञात चोर का अभियोग पंजीकृत किया गया। अभियोग उपरोक्त मे वांछित अभियुक्तगण की शीघ्र गिरफ्तारी/बरामदगी हेतु पुलिस अधीक्षक जनपद सोनभद्र डॉ0 पुलिस द्वारा मुखबिर की सूचना पर धर्मशाला चौराहे के पास से 02 नफर वांछित अभियुक्तगण को गिरफ्तार कर अभियोग उपरोक्त से सम्बन्धित 01 अदद मोटरसाइकिल बरामद किया गया । उपरोक्त गिरफ्तारी/बरामदगी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त मे धारा 411 भादवि की बढ़ोत्तरी करते हुए अग्रिम वैधानिक कार्यवाही प्रचलित है। गिरफ्तारी/बरामदगी का विवरण निम्नवत् है- **गिरफ्तार अभियुक्तगण का विवरण-** 1. जयकुमार पुत्र **विवरण-** अभियुक्तगण उपरोक्त के कब्जे से 01 अदद मोटर साइकिल संख्या पैशन प्रो श्इ53श्इ3769 बरामद । **गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम-** 1. उ0नि0 संजीव कुमार राय, थाना रॉबट्र्सगंज, जनपद सोनभद्र । 2. आरक्षी योगेश कुमार तिवारी, थाना राबट्र्सगंज,जनपद सोनभद्र । 3. आरक्षी अजीत यादव, थाना रॉबट्र्सगंज,जनपद सोनभद्र।

बेटी के जन्म के साथ ही लगाएं सागौन के 10 पौधे

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। प्रदेश की समग्र ग्राम्य विकास एवं ग्रामीण अभियंत्रण राज्य मंत्री विजय लक्ष्मी गौतम ने बृहस्पतिवार को जिले का दौरा किया। अष्टभुजा डाक बंगला में विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक कर योजनाओं की समीक्षा की। इसके साथ ही उन्होंने मझवां में चौपाल लगाकर ग्रामीणों की समस्याओं की सुनवाई की। उन्होंने दलित के घर भोजन किया और अमृत सरोवर का लोकार्पण भी किया।

अष्टभुजा डाक बंगला में विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक कर उन्होंने विकास कार्य, निर्माणाधीन सड़कों, ग्राम सचिवालय, पंचायत एवं सामुदायिक शौचालयों के निर्माण की प्रगति व उपयोगिता के बारे में जानकारी ली। मुख्य विकास अधिकारी श्रीलक्ष्मी वीएस ने बताया कि जिले के 809 ग्राम पंचायतों में से 230 में काम चल रहे हैं। मनरेगा के तहत 44 लाख मानव दिवस सृजित करने का लक्ष्य है। इसकी तुलना में 32 लाख मानव दिवस का लक्ष्य पूरा कर लिया गया है। बैठक में प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री आवास योजना में हुई प्रगति की समीक्षा की गई। जनप्रतिनिधियों के कार्यों की शिकायत मिलने पर उन्होंने अधिकारियों को सूची उपलब्ध कराते हुए जांच का निर्देश भी दिया। उधर, राज्य मंत्री ने मझवां विकास खंड के चड़िया ग्राम में अमृत सरोवर का लोकार्पण किया। अमृत सरोवर में मस्त्य बीज भी छोड़े गए। मंत्री ने बरगद व अन्य पौधों का रोपण भी किया। उन्होंने अमृत सरोवर के पास स्थित प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कक्षा पांच, छह, सात व आठ में जाकर बच्चों से हिंदी, अंग्रेजी व सामान्य ज्ञान का पूछा। जिसका सही उत्तर मिलने पर उन्होंने बच्चों की सराहना की। उन्होंने बच्चों के लिए उपलब्ध सुविधाओं की भी जानकारी ली। उन्होंने इसी गांव की सरोज बस्ती में चौपाल लगाकर लोगों की समस्याओं की सुनवाई की। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों से आह्वान किया कि बेटी के जन्म पर माता-पिता 10 सागौन के पौधे लगाएं। जब तक बेटी शादी के योग्य होगी, तब तक सागौन के पेड़ तैयार हो जाएंगे। पेड़ बेचकर बेटियों की शादी की जा सकती है। उन्होंने पोषण अभियान के तहत लगी प्रदर्शनी में उपस्थित महिलाओं की गोद भराई की रस्म व शिशुओं का अन्नप्राशन भी किया। इसके बाद उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना की अनुसूचित जाति की लाभार्थी अंजू देवी पत्नी कमलेश के घर पहुंचकर उनके साथ भोजन किया। लाभार्थी व उनके परिजनों ने मंत्री के भोजन करने पर खुशी जताई। इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी श्रीलक्ष्मी वीएस, ब्लॉक प्रमुख दिनेश प्रताप सिंह व अन्य लोग मौजूद थे।

गैंगस्टर एक्ट के वांछित दो अभियुक्तों को किया गया गिरफतार

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देशन में जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय भेजा गया। **गिरफ्तार अभियुक्तगण-** 1. अब्दुल कादिर पुत्र अब्दुल कयूम निवासी ग्राम

जा रहे अभियान के क्रम में थाना विण्ढमगंज पुलिस द्वारा थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0-114/2022 धारा 3(1) गैंगेस्टर एक्ट से सम्बन्धित वांछित अभियुक्तगण क्रमशः 1. अब्दुल कादिर पुत्र अब्दुल कयूम 2. मो0 अरशद पुत्र मो0 अयूब समस्त निवासीगण ग्राम बैरखड़, थाना विण्ढमगंज, जनपद सोनभद्र को बैरखड़, थाना विण्ढमगंज, जनपद सोनभद्र । 2. मो0 अरशद पुत्र मो0 अयूब निवासी ग्राम बैरखड़, थाना विण्ढमगंज, जनपद सोनभद्र । **गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम-** 1. उ0नि0 मो0 अरशद, थाना विण्ढमगंज, जनपद सोनभद्र । 2. आरक्षी अजय यादव, थाना विण्ढमगंज, जनपद सोनभद्र । 3. रोहित यादव, थाना विण्ढमगंज, जनपद सोनभद्र ।

साक्षी मोबाइल केयर दुकान से मोबाइल चोरी करने वाले 4अभियुक्तो को गिरफतार किया गया

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। मोबाइल शाप में मोबाइल चोरी के पश्चात वादी मनोज पटेल पुत्र सुरेन्द्र सिंह, निवासी बहुआर, थाना रॉबट्र्सगंज, जनपद सोनभद्र द्वारा लिखित प्रार्थना पत्र दिया गया पर्यवेक्षण एवं नेतृत्व मे राबट्र्सगंज पुलिस द्वारा मुखबिर की सूचना पर पंचायत भवन लोढ़ी के पास थाना रॉबट्र्सगंज जनपद सोनभद्र के पास से वांछित अभियुक्तगण को गिरफ्तार कर अभियोग उपरोक्त से सम्बन्धित सोनभद्र उम्र लगभग 27 वर्ष । 4. मोहन पुत्र रामवृक्ष, निवासी रोडवेज के पास कस्बा रॉबर्स्कगंज, जनपद सोनभद्र, उम्र लगभग 25 वर्ष। **बरामदगी का विवरण-** अभियुक्तगण उपरोक्त के कब्जे से

कि वादी की साक्षी मोबाइल केयर दुकान से दो अदद मोबाईल 1.मॉडल सैमसंग ए250 व 2. लेनोवो ख्6 हदू चोरी कर लिया गया । जिसके सम्बन्ध मे थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0-0841/2022 धारा 380 भा0द0वि0 का अभियोग पंजीकृत किया गया। मुकदमा उपरोक्त मे वांछित अभियुकगण की शीघ्र गिरफ्तारी/बरामदगी हेतु पुलिस अधीक्षक जनपद सोनभद्र डॉ0 यशवीर सिंह द्वारा सख्त निर्देश दिये गये । उक्त निर्देश के क्रम मे अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) एवं क्षेत्राधिकारी नगर के निकट सामान बरामद किया गया । उपरोक्त गिरफ्तारी/बरामदगी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त मे धारा 411 भादवि की बढ़ोत्तरी करते हुए अग्रिम वैधानिक कार्यवाही प्रचलित है। गिरफ्तारी/बरामदगी का विवरण निम्नवत् है- **गिरफ्तार अभियुक्तगण का विवरण-** 1. दीपक पुत्र जोखन, निवासी परासी पाण्डेय, थाना रॉबर्टसगंज, जनपद सोनभद्र उम्र लगभग 24 वर्ष । 2. अशोक कुमार पुत्र पप्पू, निवासी हिन्दूआरी, थाना रॉबट्र्सगंज, जनपद सोनभद्र, उम्र लगभग 25 वर्ष । 3. मनोज बियार पुत्र स्व0 कामेश्वर प्रसाद, निवासी बरकरा, थाना रॉबट्र्सगंजॉ जनपद 02 अदद मोबाइल व 01 अदद बैटरी बरामद । **गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम-** 1. उ0नि0 साहिद यादव, प्रभारी चौकी लोढ़ी अस्पताल, थाना रॉबट्र्सगंज, जनपद सोनभद्र । 2. उ0नि0 संजीव कुमार राय, थाना रॉबट्र्सगंज, जनपद सोनभद्र । 3. आरक्षी शिवचन्द पटेल, चौकी लोढ़ी अस्पताल, थाना रॉबट्र्सगंज,जनपद सोनभद्र । 4. आरक्षी योगेश कुमार तिवारी, थाना रॉबट्र्सगंज,जनपद सोनभद्र । 5. आरक्षी अजीत यादव, थाना रॉबट्र्सगंज,जनपद सोनभद्र।

विकास भवन मे लगे सरकारी जंग लेटर पर चोरों ने किया हाथ साफ

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र।विकास भवन मे लगे सरकारी जगलेटर में से दिवाली और छठ कि छुट्टी के दरमियान खोल कर चोरों ने उड़ाया समान दिपावली कि छुट्टी होने के कारण परिस खाली होने के कारण जंग लेटर से सारे पाट्स एक एक करके गायब कर दिए गए जबकि विकास भवन मे परमानेंट एक गार्ड कि डुयूटी लगी रहती है इसके बावजूद भी चोरों ने घटना को अन्जाम दिया वरिष्ठ सहायक पद पर तैनात सहायक प्रदीप दुबे ने बताया कि कोतवाली में एफ आई आर दर्ज करा दी गई है साथ ही उच्च अधिकारी को इसकी सूचना दी गई है परन्तु अभी तक चोर का पता नहीं चल पाया है।

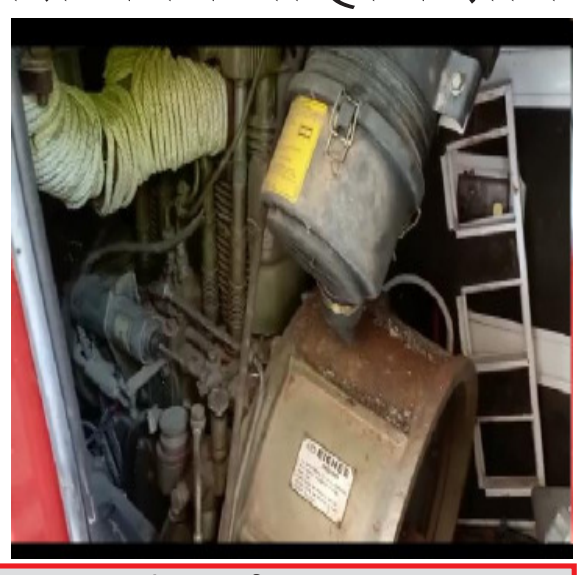

दो वांछित अपराधियों कि हुई गिरफ्तारी

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र डॉ0 यशवीर सिंह के निर्देशन में जनपद में अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम मेंथाना करमा पुलिस द्वारा थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0-132/2022 धारा 306, 506 भादवि से सम्बन्धित 02 नफर वांछित अभियुक्तगण राकेश मौर्य पुत्र प्रेम नाथ मौर्य व कृष्णावती पत्नी राकेश मौर्य, निवासीगण ग्राम पटेहरा, थाना करमा, जनपद सोनभद्र को गिरफ्तार कर अग्रिम विधिक कार्रवाई की गयी । **गिरफ्तार अभियुक्त का विवरणः-** 01. राकेश मौर्य पुत्र प्रेम नाथ मौर्य, निवासी ग्राम पटेहरा, थाना करमा, जनपद सोनभद्र। 02. कृष्णावती पत्नी राकेश मौर्य, निवासी ग्राम पटेहरा, थाना करमा, जनपद सोनभद्र।

सोनभद्र में कनहर सिंचाई परियोजना की वनभूमि हस्तांतरण में यूपी कैबिनेट की मिली मंजूरी

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। योगी सरकार ने गुरुवार को कनहर सिंचाई परियोजना के निर्माण में आड़े आ रही वन भूमि संबंधी एक बड़ी बाधा को दूर करते हुए सिंचाई विभाग को भूमि हस्तांतरण करने के लिए कैबिनेट की मंजूरी मिल गई। अब सिंचाई महकमा नहर निर्माण के लिए आवश्यक 127.1637 हेक्टेयर वन भूमि के एवज में गैर वन भूमि के रूप में 160.7608 हेक्टेयर भूमि हस्तांतरण करेगी। इस भूमि पर पौधरोपण के लिए वन विभाग के मांग के सापेक्ष सिंचाई महकमे ने जनवरी 2021 में ही 39.95 करोड़ रुपये भारत सरकार के कैंपा हेड में जमा कर रखा है। इस बाबत परियोजना के नोडल अधिकारी इंजीनियर विनोद कुमार

ने बताया कि कनहर सिंचाई परियोजना के मुख्य बांध के निर्माण में आड़े आ रही 980 हेक्टेयर वन भूमि का मसला को तो अस्सी के दशक में ही सुलझा लिया गया था, जिससे परियोजना के मुख्य बांध का निर्माण करीब अस्सी फीसद से ऊपर किया जा चुका है, किन्तु 104 किमी लंबे नहर के निर्माण में आड़े आ रही 127.1637 हेक्टेयर वन भूमि की वजह से एशिया का सबसे बड़े जल सेतु एवं जल सुरंग का कार्य बीते चार वर्षों से ठप पड़ा हुआ था। इसके लिए वन मंत्रालय के नियमावली के तहत सभी शर्तों को पूरा करते हुए जनवरी 2021 में 39.95 करोड़ रूपये की धनराशि भारत सरकार के कैम्पा हेड में जमा किया जा चुका था, किंतु मंजूरी नहीं मिलने के कारण कार्य बाधित था।

हत्या के दोषियों को उम्रकैद प्रत्येक को 35 हजार रुपये अर्थदंड, न देने पर 6-6 माह की अतिरिक्त कैद

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। 20 वर्ष पूर्व हुए शिवकुमार केशरी हत्याकांड के मामले में वृहस्पतिवार को सुनवाई करते हुए अपर सत्र न्यायाधीश प्रथम खलीकुज्ज्मा की अदालत ने दोषसिद्ध पाकर दोषियों सरोज यादव व मृत्युंजय रॉय को उम्रकैद एवं 35-35 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर 6-6 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं एक अन्य आरोपी दोषमुक्त हो गया, जबकि किशोर अपराधी उमेश रॉय की पत्रावली अलग कर दी गई है जो किशोर न्यायालय में विचाराधीन है। अभियोजन पक्ष के मुताबिक ओबरा टैक्सी स्टैंड निवासी राजकुमार केशरी ने 5 अगस्त 2002 को ओबरा थाने में दी तहरीर में आरोप लगाया था कि उसके भाई

शिवकुमार केशरी की मार्शल जीप को 2 अगस्त 2002 को एक लड़का जो अपने को सेक्टर 8 ओबरा का निवासी बताकर साथियों के साथ विंध्याचल दर्शन के लिए जाने की बात करके बुक किया और 3 अगस्त 2002 को 4 बजे भोर में दर्शन के लिए सभी लोग गए और भाई ही गाड़ी चलाकर ले गया। उसके बाद भाई वापस नहीं लौटा। इस तहरीर पर पुलिस ने पहले गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज की और बाद में हत्या समेत अन्य धाराओं में एफआईआर दर्ज की गई। पुलिस ने मामले की विवेचना किया और पर्याप्त सबूत मिलने पर विवेचक ने न्यायालय में बिहार प्रांत के बक्सर जिला अंतर्गत धनसोइ थाना के गोवर्धन पुर निवासी सरोज यादव पुत्र बालेश्वर यादव व बक्सर जिला के राजपुर थानांतर्गत सरेज गांव निवासी मृत्युंजय रॉय पुत्र बब्बन रॉय समेत 4 लोगों के विरुद्ध हत्या समेत विभिन्न धाराओं में चार्जशीट दाखिल किया। मामले की सुनवाई करते हुए अदालत ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने पर दोषसिद्ध पाकर दोषियों सरोज यादव व मृतुन्जय रॉय को उम्रकैद एवं 35-35 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर 6-6 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं एक अन्य आरोपी तेजनरायन को साक्ष्य के अभाव में दोषमुक्त करार दिया, जबकि एक किशोर अपराधी उमेश रॉय पुत्र हरिनाथ रॉय की पत्रावली अलग कर दी गई है। यह मामला किशोर न्यायालय में विचाराधीन है। अभियोजन पक्ष की ओर से पैरवी अपर जिला शासकीय अधिवक्ता कुंवर वीर प्रताप सिंह ने की।

पृथ्वी, श्रेयस व सरफराज की पारी से पहली बार फाइनल में पहुंची मुंबई

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। सैयद मुश्ताक अली ट्राफी टूर्नामेंट के इतिहास में पहली बारी मुंबई ने फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। अंजिक्य रहाणे की कप्तानी में मुंबई ने इस पूरे

सीजन में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए फाइनल में जगह बनाई जहां उसका सामना हिमाचल प्रदेश के साथ होगा। मुंबई ने दूसरे सेमीफाइनल मैच में विदर्भ को हराते हुए ये सफलता हासिल की तो वहीं इस टूर्नामेंट के पहले सेमीफाइनल में हिमाचल ने पंजाब को हराकर फाइनल में जगह बनाई। मुंबई टीम की जीत में श्रेयस अय्यर की अर्धशतकीय पारी साथ ही पृथ्वी शा व सरफराज खान की छोटी, लेकिन तेज पारी का बड़ा योगदान रहा। इस टूर्नामेंट के दूसरे सेमीफाइनल मुकाबले में मुंबई का सामना विदर्भ के साथ हुआ। विदर्भ ने इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए जीतेश शर्मा की 46 रन जबकि अक्षय वानखेड़े की 34 रन की पारी के दम पर 20 ओवर में 7 विकेट पर 164 रन का स्कोर खड़ा किया। मुंबई की तरफ से शम्स मुलानी ने तीन जबकि तुषार देशपांडे व शिवम दूबे ने दो-दो सफलता अर्जित की। मुंबई को जीत के लिए 165 रन का लक्ष्य मिला था, लेकिन इस टीम ने श्रेयस अय्यर, पृथ्वी शा व सरफराज खान की पारी के दम पर 16.5 ओवर में 5 विकेट पर 169 रन बनाते हुए मैच को 5 विकेट से जीत लिया और फाइनल में जगह बना ली। जीत के लिए मिले 165 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी मुंबई की टीम ने पहला विकेट कप्तान अजिंक्य रहाणे के तौर पर गंवा दिया जिन्होंने 5 रन बनाए थे। रहाणे ने पृथ्वी शा के साथ पारी की शुरुआत की थी। इसके ठीक बार यशस्वी जयसवाल भी 12 रन के स्कोर पर पवेलियन लौट गए। फिर श्रेयस अय्यर ने कमान संभाली और तीसरे विकेट लिए पृथ्वी शा के साथ मिलकर 43 रन की साझेदरी की, लेकिन इसके बाद 21 गेंदों पर 3 छक्के व 2 चौकों की मदद से 34 रन की तेज पारी खेलकर पृथ्वी शा आउट हो गए। श्रेयस अय्यर ने सरफराज खान के साथ मिलकर चौथे विकेट के लिए 74 रन की बेहतरीन साझेदारी करके टीम को जीत की राह पर ला दिया, लेकिन 44 गेंदों पर 4 छक्के व 7 चौकों की मदद से 73 रन की पारी खेलकर आउट हो गए। वहीं सरफराज खान ने भी 19 गेंदों पर एक छक्का व 2 चौकों की मदद से 27 रन बनाए और आउट हो गए। इसके बाद शिवम दूबे ने नाबाद 13 रन जबकि शम्स मुलानी ने नाबाद एक रन की पारी खेलते हुए टीम को आसान जीत दिला दी।

शाहीद अफरीदी ने कहा- इंडिया को सेमीफाइनल में पहुंचाना चाहती है आईसीसी क्या है पूरा मामला

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। टी20 वर्ल्ड कप में भारत का प्रदर्शन काफी शानदार रहा है। पाकिस्तान, नीदरलैंड और बांग्लादेश को हराकर टीम इंडिया ने लगभग सेमीफाइनल में इंट्री मार ही ली है। बुधवार को भारत ने बांग्लादेश को 5 रन से हरा दिया।

इस रोमांचक मुकाबले में कप्तान शाकिब अल हसन ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए केएल राहुल व विराट कोहली की अर्धशतकीय पारी के दम पर 20 ओवर में 6 विकेट पर 184 रन बना इस मैच मे कई ऐसी घटनाएं घटी, जिसने विवाद खड़ कर दिया। टीम इंडिया जब बल्लेबाजी कर रही थी उस दौरान अंपयार ने एक गेंद को वाइड करार दिया, हालांकि अंपायर द्वारा वाइड करार दिए जाने से पहले विराट ने अंपायर को बताया था कि यह वाइड गेंद है। इसके अलावा बांग्लादेश के विकेटकीपर-बल्लेबाज नुरुल हसन और बांग्लादेशी फैंस ने भारतीय स्टार बल्लेबाज विराट कोहली पर 'फेक फील्डिंग' का आरोप लगाया है बांग्लादेश के खिलाफ मिली जीत के बाद टीम इंडिया प्वाइंट टेबल-2 में शीर्ष स्थान पर पहुंच चुकी है। बुधवार के दिन इस मैच के बाद पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर शाहिद अफरीदी ने टी20 वर्ल्ड कप को लेकर एक विवादित बयान दिया। बता दें कि भारत-बांग्लादेश मैच को बारिश की वजह से कुछ देर के लिए रोक दिया गया था। बारिश के बाद जल्द ही यह मैच शुरू कर दिया गया। बारिश के बाद मैच शुरू करने को लेकर अंपायर के फैसले पर शाहिद अफरीदी ने तंज कसते हुए कहा, 'आइसीसी टीम इंडिया को सेमीफाइनल में पहुंचाना चाहती है।उन्होंने आगे कहा, 'शाकिब अल हसन भी यही कह रहे थे।

ऑस्ट्रेलिया को अफगानिस्तान के विरुद्ध दर्ज करनी होगी बड़ी जीत आयरलैंड का मुकाबला न्यूजीलैंड से

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। गत चैंपियन और मेजबान ऑस्ट्रेलिया को अफगानिस्तान के खिलाफ शुक्रवार को एडिलेड में होने वाले मुकाबले में सेमीफाइनल की दौड़ में बने रहने

के लिए बड़ी जीत दर्ज करनी होगी। ऑस्ट्रेलिया अगर बड़े अंतर से जीत हासिल करने में सफल रहा तो टीम का नेट रन रेट बेहतर हो जाएगा और वह अंतिम चार में प्रवेश करने की संभावनाओं को मजबूत कर लेगा।ऑस्ट्रेलिया ने इस टूर्नामेंट में अब तक कुछ खास प्रदर्शन नहीं किया है और वह अफगानिस्तान के खिलाफ मैच से पहले कप्तान एरोन फिंच सहित तीन प्रमुख खिलाड़ियों की चोट की समस्या से भी जूझ रही है। फिंच के अलावा टिम डेविड और मार्कस स्टोइनिस को सोमवार को ब्रिसबेन में आयरलैंड पर ऑस्ट्रेलिया की 42 रन की जीत के दौरान पैर की मांसपेशियों में खिंचाव का सामना करना पड़ा था।फिंच का टीम के फिटनेस स्टाफ और मुख्य चयनकर्ता जार्ज बेली की मौजूदगी में फिटनेस परीक्षण हुआ। ऑस्ट्रेलिया के लिए सबसे बड़ी चिंता फिंच की चोट है, क्योंकि यह 35 वर्षीय खिलाड़ी पहले ही पैर की मांसपेशियों में चोट की समस्या से परेशान रहा है। अगर फिंच मुकाबले से बाहर हो जाते हैं तो विकेटकीपर मैथ्यू वेड अफगानिस्तान के विरुद्ध ऑस्ट्रेलिया की कप्तानी करेंगे।फिंच के आयरलैंड के विरुद्ध मैदान से बाहर जाने के बाद भी वेड ने कप्तानी की जिम्मेदारी निभाई थी। ऐसी स्थिति में युवा आलराउंडर कैमरून ग्रीन सलामी बल्लेबाज के रूप में फिंच की जगह ले सकते हैं। दूसरी तरफ, अफगानिस्तान के लिए इस मैच में खोने के लिए कुछ नहीं है क्योंकि वह पहले ही सेमीफाइनल की दौड़ से बाहर हो चुका है। हालांकि, उसके पास मेजबान टीम का सफर रोकने का मौका रहेगा। न्यूजीलैंड को हर हाल में पार करनी होगी आयरलैंड की चुनौती न्यूज़ीलैंड के पास पिछले मैच में इंग्लैंड को हराकर सेमीफाइनल में जगह पक्की करने का एक अच्छा अवसर था, लेकिन टीम इस मौके से चूक गई थी। हालांकि, शुक्रवार को उसका सामना आयरलैंड से होगा और टूर्नामेंट में आगे बढ़ने के लिए उसे हर हाल में जीत दर्ज करनी जरूरी है। एक और हार कीवी टीम के लिए आगे के सारे रास्ते बंद कर सकती है।

मेलबर्न में भारत के साथ कौन खेलेगा टी20 वर्ल्ड कप फाइनल

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। दिमाग रिकी पोंटिंग ने भविष्यवाणी की है कि भारत और आस्ट्रेलिया मेलबर्न में आई है, लेकिन इसके बाजवूद फाइनल मैच आस्ट्रेलिया बनाम भारत होगा। टीम इंडिया की बात करें तो ग्रुप में भारतीय टीम 6

फाइनल में खेलने वाली दो टीमें होंगी, भले ही दक्षिण अफ्रीका पूरी प्रतियोगिता में खतरनाक दिखी हो। पोंटिंग ने आइसीसी के कालम में लिखा कि ईमानदारी से कहूं तो किसे पता है कि कौन दो टीमें मेलबर्न में फाइनल खेलने जा रही हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि आस्ट्रेलिया अपने ग्रुप में फाइनल तक पहुंचने का कोई रास्ता निकाल लेगी साथ ही दूसरी टीम भारत होगी। हालांकि साउथ अफ्रीका एक खतरनाक टीम के रूप में सामने अंक के साथ पहले स्थान पर है जबकि दूसरे नंबर पर 5 अंक के साथ साउथ अफ्रीका है तो वहीं पाकिस्तान की टीम ने साउथ अफ्रीका को हराकर 4 अंक के साथ अंकतालिका में तीसरे नंबर पर जगह बना ली है। वहीं ग्रुप ए की बात करें तो यहां मामला बेहद रोमांचक हैं जिसमें 5 अंक के साथ न्यूजीलैंड पहले नंबर पर है जबकि इतने ही अंक के साथ इंग्लैंड दूसरे नंबर पर जबकि आस्ट्रेलिया तीसरे नंबर पर मौजूद है।

टी20 विश्व कप में इस गेंदबाज ने फेंकी हैं 8 सबसे तेज गेंद स्पीड जानकर चौंक जाएंगे आप

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। टी20 विश्व कप 2022 में सुपर-12 के मुकाबले खेले जा रहे हैं। इस साल कई छोटी टीमों ने बड़ा उलटफेर किया। वहीं इस साल के टी20 विश्व कप में तेज गेंदबाजों का भी बोलबाल देखने

को मिल रहा है। ऑस्ट्रेलिया की उछाल भरी पिचों पर तेज गेंद अपनी स्पीड से कहर बरपा रहे हैं। बात जब तेज गति की आती है तो यह सवाल उठाता है कि किस देश के कौन से गेंदबाज इस टूर्नामेंट अब तक की सबसे तेज फेंकी है। तो चलिए जानते हैं 10 ऐसे तेज गेंदबाजों की स्पीड के बारे में जिन्होंने न सिर्फ सबसे तेज फेंकी है बल्कि बल्लेबाजों में खौफ भर दिया है।इंग्लैंड के तेज गेंदबाज मार्क वुड 10 सबसे तेज गेंदों में 8 गेंद फेंकी है। इस लिस्ट में दक्षिण अफ्रीका के एनरिक नॉर्खिया का भी नाम शामिल है। आइए एक नजर डालते हैं टी 20 विश्व कप 2022 की 10 सबसे तेज गेंदों प टी20 विश्व कप की 10 सबसे तेज गेंद टी20 विश्व कप 2022 की सबसे तेज गेंद मार्क वुड ने फेंकी है। न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच के दौरान न्यूजीलैंड के बल्लेबाज ग्लेन फिलिप्स के खिलाफ मार्क वुड ने 154.74 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी की थी। टी20 वर्ल्ड कप की 2 और 3 सबसे तेज गेंद भी मार्क वुड ने फेंकी है।

राशिफल

मेष-:आपका रूखा व्यवहार आपके जीवनसाथी का मूड खराब कर सकता है. आपको समझना चाहिए कि अनादर और किसी को गंभीरता से न लेना रिश्ते में दरार डाल सकता है।	वृष-:आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। पैसों से जुड़े काम पूरे हो सकते हैं। आप अपने सामाजिक दायरे को बढ़ाने में सफल रहेंगे। किसी मित्र से कोई शुभ समाचार मिल सकता है।	मिथुन-:आज आप जितनी मेहनत करेंगे उतना ही आपको फायदा होगा. आज कोई नया गठबंधन, अनुबंध और समझौता हो सकता है। आप काम को बहुत गंभीरता और गंभीरता से पूरा करेंगे।	कर्क-:चोट से बचने के लिए सावधानी से बैठें। वहीं, सही तरीके से कमर सीधी करके बैठने से न सिर्फ पर्सनालिटी में निखार आता है, बल्कि सेहत और आत्मविश्वास का स्तर भी बढ़ता है।
सिंह-:आज आपका ध्यान रचनात्मक कार्यों की ओर रहेगा, ऑफिस के महत्वपूर्ण कार्यों में आप व्यस्त रहेंगे. आज आपकी बातों का असर दूसरे लोगों पर भी पड़ेगा।	कन्या-:परिवार से आपको भरपूर सहयोग और स्नेह मिलेगा, काम में आ रही बाधाएं दूर होंगी. कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। व्यापार में लाभ के योग हैं।	तुला-: मानसिक स्पष्टता के लिए भ्रम और निराशा से बचने की कोशिश करें. आपकी अवास्तविक योजनाएं आपके पैसे को खत्म कर सकती हैं।	वृश्चिक-:आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। परेशान लोगों को मनाने का आज एक अच्छा मौका है। दोस्तों आज कहीं पिकनिक पर जाने का प्लान बना सकते हैं।
धनु-:पढ़ाई कर रहे छात्रों के लिए आज का समय बहुत अच्छा है अगर आप मन लगाकर पढ़ाई करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी. आप में से कुछ लोग आज रिश्तेदारों या दोस्तों के साथ अच्छा दिन बिताएंगे।	मकर-:ऐसे लोगों की तरह व्यवहार न करें जो अपने सपनों के लिए अपने घर और स्वास्थ्य का त्याग करते हैं और केवल अपनी महत्वाकांक्षाओं के पीछे भागते हैं।	कुंभ-: आज आपकी दिनचर्या में जरूरी बदलाव हो सकते हैं. कोई करीबी आपसे मिलने घर आ सकता है, मन प्रसन्न रहेगा। व्यापार करने वालों के लिए आज का दिन अच्छा है।	मीन-:आज के दिन रिश्तों में मधुरता बढ़ाने के लिए आप अचानक घूमने-फिरने का प्लान बना सकते हैं. जो आपके लिए काफी रोमांटिक रहेगा। आज आप आर्थिक योजना बना पाएंगे।

बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने 'फेक फील्डिंग' पर लिया संज्ञान, जलाल यूनुस ने कहा- उचित मंच पर उठाया जाएगा मुद्दा

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। टी20 वर्ल्ड कप 2022 के राउंड-12 में भारत ने बांग्लादेश को 5 रन से हरा दी है। इस मैच में बांग्लादेश के विकेटकीपर-बल्लेबाज नुरुल हसन ने भारतीय खिलाड़ी विराट कोहली पर 'फेक फील्डिंग' (ईव इगत्हु) का आरोप लगाया है। नुरुल जिस घटना का जिक्र कर रहे थे वह सातवें ओवर में हुई। भारत की तरफ से अक्षर पटेल गेंदबाजी कर रहे थे। लिटन दास ने डीप मिड विकेट की तरफ गेंद खेली। अर्शदीप ने गेंद को फील्ड कर थ्रो किया। इस पर कोहली ने ऐसे जताया कि जैसे वह गेंद को पकड़कर नॉन-स्ट्राइकर की तरफ थ्रो कर रहे हैं। आइसीसी के नियम 41.5 के तहत फील्डिंग कर रही टीम जानबूझकर ध्यान भटकाने, धोखे या बल्लेबाज को बाधा पहुंचाता है तो वह खेल नियम के तहत गलत माना जाएगा। यदि अंपायर को लगता है कि किसी ने नियम का उल्लंघन किया है तो वह डेड बॉल घोषित कर सकते हैं और टीम पर पांच रन की पेनल्टी लगा सकते हैं।

आइसीसी वित्त मामलों की समिति के प्रमुख हो सकते हैं बीसीसीआइ प्रतिनिधि, सूत्र ने दी जानकारा

मेलबर्न। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आइसीसी) के बोर्ड में शामिल होने वाले भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआइ) के प्रतिनिधि को वैश्विक क्रिकेट संस्था के वित्त और व्यावसायिक मामलों की समिति का प्रमुख बनाया जा सकता है।हालांकि बीसीसीआइ ने कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की है, लेकिन सचिव जय शाह के आइसीसी बोर्ड में भारतीय प्रतिनिधि बनने की संभावना है। शाह हालांकि रोजर बिन्नी को भी बोर्ड में भेज सकते हैं और ऐसी स्थिति में वह मुख्य कार्यकारियों की समिति का हिस्सा बने रहेंगे। वित्त और व्यावसायिक मामलों की समिति आइसीसी की सभी उप समितियों में सबसे महत्वपूर्ण है। बीसीसीआइ के पूर्व अध्यक्ष सौरव गांगुली के इसका हिस्सा बनने से पहले बीसीसीआइ का कोई प्रतिनिधि कई वर्षों तक इसका

हिस्सा नहीं था। सूत्रों के मुताबिक, अगर जय शाह आइसीसी बोर्ड में बीसीसीआइ का प्रतिनिधित्व करते हैं तो वह स्वतः ही वित्त और व्यावसायिक समिति का हिस्सा बन जाएंगे। लंबे समय से अगले एक दो दिन में शाह आइसीसी बोर्ड की वार्षिक बैठक में शामिल होने मेलबर्न पहुंचेगे। इस मामले की जानकारी रखने वाले आइसीसी के एक सूत्र ने समाचार एजेंसी पीटीआइ को जानकारी देते हुए कहा, 'अगर जय शाह आइसीसी बोर्ड में बीसीसीआइ का प्रतिनिधित्व करते हैं तो वह स्वतः ही वित्त और व्यावसायिक मामलों की समिति का प्रमुख बनने की बीसीसीआइ की बारी है।' शाह आइसीसी की वार्षिक बोर्ड बैठक के लिए अगले कुछ दिन में मेलबर्न पहुंचेंगे। बीसीसीआइ के नव नियुक्त अध्यक्ष रोजर बिन्नी और आइपीएल अध्यक्ष अरूण धूमल के भी टी20 वर्ल्ड कप देखने के लिए ऑस्ट्रेलिया पहुंचने की उम्मीद है। यह देखना काफी दिलचस्प होगा कि आइसीसी की मुख्य कार्यकारियों की बैठक मैं कौन भारतीय शामिल होने वाला है। बता दें कि व्यावसायिक मामलों की समिति आइसीसी के वार्षिक बजट पर फैसला करती है। यह समिति राजस्व साझा करने के मॉडल, प्रायोजन और निश्चित चक्र में विभिन्न अधिकार करार पर फैसला करती है। गौरतलब है कि न्यूजीलैंड के निवर्तमान चेयरमैन ग्रेग बारक्ले एक और कार्याकाल के प्रबल दावेदार हैं, लेकिन एक और उम्मीदवार ने नांमाकन भरा है। वहीं, गांगुली, आइसीसी क्रिकेट समिति में बने रह सकते हैं क्योंकि यह तीन साल का कार्यकाल है।

भारतीय टीम की जर्सी पहने बच्चे के साथ राहुल गांधी ने खेला क्रिकेट, के टीम इंडिया लिए लिखा खास संदेश

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। टी20 वर्ल्ड कप 2022 में टीम इंडिया का प्रदर्शन अब तक काफी शानदार रहा है। पाकिस्तान,नीदरलैंड और साउथ अफ्रीका को हराकर टीम इंडिया ने लगभग सेमीफाइनल में इंट्री बना ली है। राउंड-12 में भारत को सिर्फ साउथ अफ्रीका के हाथों ही हार का सामना करना पड़ा है। भारत का अगला मुकाबला जिम्बांवे के खिलाफ 6 नवंबर को होगा। इस समय टीम इंडिया के पूर्व कप्तान विराट कोहली जबरदस्त लय में दिख रहे हैं। कोहली ने बांग्लादेश के खिलाफ नाबाद 64 रन की पारी की वजह से उन्हें प्लेयर आफ द मैच का खिताब दिया गया। उन्होंने टी20 वर्ल्ड कप 2022 में पिछले 4 मैचों में दूसरी बार ये खिताब अपने नाम किया। कोहली ने अब तक चार मैचों में 82, 62, 12, 64ङ रन की पारी खेली है।गौरतलब है कि भारतीय क्रिकेट फैंस उम्मीद कर रहे हैं कि इस बार टीम इंडिया दूसरी बार टी20 वर्ल्ड कप की ट्रॉफी उठाने में कामयाब हो। इस बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 'भारत जोड़ो यात्रा' के दौरान 2 नवंबर को हैदराबाद के पटनचेरुवु में एक बच्चे के साथ क्रिकेट खेला। इस वीडियो के कांग्रेस ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर शेयर किया। वीडियो में देखा जा सकता है कि राहुल गांधी एक छोटे बच्चे के साथ क्रिकेट खेल रहे हैं। बच्चें ने बैट पर राहुल गांधी से ऑटोग्राफ भी ली है। वीडियो के कैप्शन में लिखा गया, ' आप देखिए, भारत की जर्सी पहनने से आपके साथ क्या होता है - आपको

अफ्रीका को हराकर टीम इंडिया ने लगभग सेमीफाइनल में इंट्री बना ली है। राउंड-12 में भारत को सिर्फ साउथ अफ्रीका के हाथों ही हार का सामना करना पड़ा है। भारत का अगला मुकाबला जिम्बांवे के खिलाफ 6 नवंबर को होगा। इस समय टीम इंडिया के पूर्व कप्तान विराट कोहली जबरदस्त लय में दिख रहे हैं। कोहली ने बांग्लादेश के खिलाफ नाबाद 64 रन की पारी की वजह से उन्हें प्लेयर आफ द मैच का खिताब दिया गया। उन्होंने टी20 वर्ल्ड कप 2022 में पिछले 4 मैचों में दूसरी बार ये खिताब अपने नाम किया। कोहली ने अब तक चार मैचों में 82, 62, 12, 64ङ रन की पारी खेली है।गौरतलब है कि भारतीय क्रिकेट फैंस उम्मीद कर रहे हैं कि इस बार टीम इंडिया दूसरी बार टी20 वर्ल्ड कप की ट्रॉफी उठाने में कामयाब हो। इस बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 'भारत जोड़ो यात्रा' के दौरान 2 नवंबर को हैदराबाद के पटनचेरुवु में एक बच्चे के साथ क्रिकेट खेला। इस वीडियो के कांग्रेस ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर शेयर किया। वीडियो में देखा जा सकता है कि राहुल गांधी एक छोटे बच्चे के साथ क्रिकेट खेल रहे हैं। बच्चें ने बैट पर राहुल गांधी से ऑटोग्राफ भी ली है। वीडियो के कैप्शन में लिखा गया, ' आप देखिए, भारत की जर्सी पहनने से आपके साथ क्या होता है - आपको अजेय बनाता है। बता दें कि यात्रा के दौरान एक बच्चे ने राहुल गांधी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। बच्चे ने नीले रंग की टीम इंडिया वाली जर्सी पहन रखी थी। राहुल गांधी ने बच्चे के साथ क्रिकेट खेलने की इच्छा जताई। उन्होंने बच्चे से बॉल लेकर गेंदबाजी शुरू कर दी और बच्चा बैटिंग करने लगा। उनके साथ यात्रा कर रहे कई लोग इस दौरान कवर, मिड ऑफ, शॉर्ट लेग एरिया में फील्डिंग करने लगे।

सम्पादकीय

संभव है दूसरी पीली क्रांति, लेकिन जीएम सरसों को लेकर कई चिंताओं का समाधान करना जरूरी

जेनेटिक इंजीनियरिंग अप्रूवल समिति यानी जीईएसी द्वारा जेनेटिकली मोडिफाइड (जीन संवर्धित-जीएम) सरसों की खेती को मंजूरी देने की सिफारिश करने के साथ ही इसका समर्थन और विरोध शुरू हो गया है। जहां समर्थक उत्पादन में बढ़ोतरी का दावा कर रहे हैं, वहीं विरोधियों का तर्क है कि जीएम सरसों के पर्यावरणीय प्रभाव आकलन को सार्वजनिक नहीं किया गया और इसके पैदावार संबंधी दावे संदिग्ध हैं। उल्लेखनीय है कि मांग के अनुरूप घरेलू उत्पादन न होने से देश में खाद्य तेल का आयात लगातार बढ़ रहा है। भारत अपनी जरूरत का 65 प्रतिशत खाद्य तेल आयात करता है। इसमें सबसे ज्यादा हिस्सा पामोलीन और सूरजमुखी के तेल का होता है। खाद्य तेल महंगाई के दौर में केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय के अधीन काम करने वाली जीईएसी ने देश में जीएम सरसों धारा मस्टर्ड हाइब्रिड 11 (डीएमएच 11) की खेती को हरी झंडी दिखाई है। जीएम सरसों पहली खाद्य फसल है जिसकी ऐसी खेती की अनुमति मिली है। सरकार से मंजूरी मिलने के बाद इसका फील्ड ट्रायल होगा, फिर इसे व्यावसायिक रूप से जारी किया जाएगा। इसके पहले 2017 में भी जीएम सरसों के फील्ड ट्रायल को अनुमति दी गई थी, लेकिन किसान संगठनों के विरोध और सुप्रीम कोर्ट द्वारा रोक लगाए जाने के बाद इसे वापस ले लिया गया था। कमोबेश यही हश्र बीटी बैंगन का भी हो चुका है। डीएमएच 11 सरसों को दिल्ली विवि में सेंटर फार जेनेटिक मैनिपुलेशन आफ क्राप प्लांट्स द्वारा विकसित किया गया है। यह दावा किया जा रहा है कि डीएमएच 11 सरसों की मौजूदा किस्मों के मुकाबले 30 प्रतिशत अधिक उत्पादक है। डीएमएच 11 में दो एलियन जीन होते हैं। इन्हें एक जीवाणु से अलग किया जाता है। यह ज्यादा उपज देने वाले सरसों के प्रजनन को सक्षम बनाता है। इन्हीं विशेषताओं के चलते आस्ट्रेलिया ने भारतीय जीएम सरसों की वाणिज्यिक खेती की अनुमति दे दी है। सरसों की मौजूदा घरेलू किस्मों की औसत उत्पादकता 1.2 टन प्रति हेक्टेयर है, जबकि वैश्विक औसत दो से 2.20 टन है। यह दावा किया जा रहा है कि जीएम सरसों की खेती से देश की खाद्य तेल आयात पर निर्भरता कम होगी। देश में 65-70 लाख हेक्टेयर भूमि पर सरसों की खेती की जाती है। जीएस सरसों के समर्थक भले ही अधिक पैदावार के दावे करें, लेकिन देश में जीएम सरसों से अधिक पैदावार देने वाली सरसों की देसी किस्मों भी मौजूद हैं। सिस्टम आफ मस्टर्ड इंटेसीफिकेशन-एसएमआइ तकनीक से मध्य प्रदेश के उमरिया जिले में 10,000 किसान सरसों की खेती कर रहे हैं, जिनकी पैदावार चार से 4.5 टन प्रति हेक्टेयर है। इसके विपरीत जीएम सरसों डीएमएच 11 की औसत पैदावार 2.6 टन प्रति हेक्टेयर होने के दावे हैं। बिहार, ओडिशा और बंगाल के किसान भी मप्र वाली तकनीक से सरसों उगा रहे हैं। सरसों की चार देसी किस्मों डीएमएच 1, 2, 3, 4 की पैदावार जीएम सरसों से ज्यादा है। वहीं देसी सरसों की 664 किस्में चिन्हित की गई हैं, जिन्हें एसएमआइ पद्धति से बोया जाए तो बेहतर परिणाम मिलेंगे। जीईएसी ने दावा किया है कि जीएम सरसों हर्बिसाइड टालरेंट है। सच्चाई यह है कि यह तकनीक मिट्टी, रोगाणुओं, पालिनेटर्स और औषधीय जड़ी-बूटियों को मार देती है। कई अध्ययन हैं, जो बताते हैं कि जीएम फसलों के हानिकारक प्रभाव होते हैं। मधुमक्खी पालन से जुड़े संगठन भी जीएम सरसों का विरोध कर रहे हैं। उनका कहना है कि इससे शहद की खेती पर बुरा असर पड़ेगा। मधुमक्खियों के परागण में सरसों के फूलों का अहम योगदान है। अधिकतर जगहों पर जीएम मुक्त सरसों के शहद की मांग है। छोटी जोत के जो किसान पारंपरिक बीजों के सहारे खेती करते हैं, वे महंगे बीजों को नहीं खरीद पाएंगे। इन बीजों को दोबारा इस्तेमाल नहीं किया जा सकेगा। इससे स्थानीय किस्मों के लिए खतरा पैदा हो सकता है। स्पष्ट है कि इन चिंताओं का समाधान करना होगा। वास्तव में किसानों को जीएम बीज की नहीं सिंचाई, उन्नत तकनीक, सूचना प्रौद्योगिकी, ग्रामीण सड़कों, बिजली, कोल्ड चेन और आधुनिक मंडी की जरूरत है। मोदी सरकार राष्ट्रीय कृषि बाजार ई-नाम, ग्रामीण सड़क, बिजली, सिंचाई, फसल बीमा, किसान रेल, किसान उड़ान जैसी मूलभूत सुविधाओं को बढ़ा रही है, लेकिन कृषि क्षेत्र में तब तक क्रांतिकारी सुधार नहीं आएगा, जब तक राज्य सरकारें ठोस जमीनी पहल नहीं करती हैं।

डिजिटल पर दिख रहा वर्दी का दम, ओटीटी पर कहानीकारों को मिला खुला मैदान

हिंदी सिनेमा के महानायक अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार, अजय देवगन, रेखा, प्रियंका चोपड़ा से लेकर रानी मुखर्जी तक कई कलाकारों ने फिल्मों में पुलिस अधिकारी के पात्रों को उसकी भाषा, परिवेश और आचरण के अनुरूप निभाया है। उसका विस्तार अब डिजिटल प्लेटफार्म पर नजर आ रहा है। पुलिस तंत्र के इर्दगिर्द बुनी इन कहानियों को विभिन्न जानर के साथ मिलाकर बनाया जा रहा है। डिजिटल प्लेटफार्म आने के बाद फिल्म की तरह कहानी को दो घंटे में कहने की बाध्यता न रहने से कहानीकारों को खुला मैदान मिला है। वे पात्रों को अच्छी तरह अभिव्यक्त कर पा रहे हैं। फिल्मों में पुलिस को अधिकतर भ्रष्टाचार में लिप्त व सख्त रवैये वाले पात्रों के तौर पर निरुपित किया गया पर डिजिटल प्लेटफार्म पर उन्हें अधिक गहराई से दर्शाया जा रहा है।अनदेखी और कैंडी वेब शो के निर्देशक आशीष आर शुक्ला कहते हैं, पुलिस तंत्र के इर्दगिर्द ड्रामा बनाने की सबसे बड़ी चुनौती तो यही होती है कि हम उन्हें इंसान दिखाएं न कि सुपरहीरो। क्राइम पेट्रोल, सीआईडी और जितने भी ऐसे शोज हैं, उन्होंने जो छवि पुलिस की बना दी है, असलियत में पुलिस वैसी नहीं होती है। रोहित शेट्टी की फिल्म सिंघम, सिंबा और सूर्यवंशी में काप को और बढ़ाचढ़ा कर दिखा दिया गया है। वे सुपरहीरो पुलिस अधिकारी बन जाते हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि यह करना गलत है। वह अलग जानर है, जहां उन्हें सुपरहीरो की तरह दिखाया जा रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि लोग पुलिस अधिकारियों के जीवन को और करीब से देखना चाहते हैं। उनकी तनख्वाह ज्यादा नहीं होती, ऊपर से दबाव होता है। काम के अनुपालन के नियम हैं।अनदेखी और कैंडी दोनों वेब सीरीज में पुलिस वाले हैं, लेकिन उनकी मजबूरियां क्या हैं, उनकी आसपास की जरुरतें क्या है, उसके मुताबिक उनकी आचार्य कहते हैं,' आरण् क थ्रिलर जानर में है। फिर भी हमने उसे वास्तविक रखते हुए महिला पुलिसकर्मी की चुनौतियों और जीवन पर फोकस किया था। हम जानर के अनुरूप पात्र को लिखते हैं। अभी

भूमिकाएं बनाई जाती हैं। महिला पुलिस अधिकारी के सामने भी नौकरी व पारिवारिक जीवन में सामंजस्य बिठाने चुनौतियां होती हैं। पाताल लोक का पुलिस वाला सुपरहीरो नहीं है, अनदेखी का पुलिस वाला घोष सुपरहीरो नहीं है। अपराधियों के बीच उनकी जिंदगी निकल गई है, तो वे उन्हें अच्छे से जानते हैं, लेकिन उसे सही तरीका नहीं पता था या वह उतने महत्वाकांक्षी नहीं थ कि आगे नहीं बढ़ पाए। पुलिस तंत्र के आसपास बुने शो के लेखन को लेकर आरण् क वेब सीरीज के लेखक चारूदत् मैंने एक शो लिखा है दुरंगा वो कोरियन शो का रीमेक है। वह बहुत ज् ादा नाटकीय है। जब कहानी वास्तविक ना हो तो उसमें हम थोड़ी स्वतंत्रता लेते हैं। वास्तविक कहानियों में पुलिस का जो प्रोटोकाल होता है उसमें भी शहर और गांव का फर्क होता है। दर्शकों को ऐसा महसूस होना चाहिए कि वाकई ऐसा होता है। हालीवुड फिल् की तरह हम कापी नहीं कर सकते। अगर हम उनको कापी करेंगे तो लोगों को लगेगा कि हमारे यहां ऐसा कहां होता है। पुलिस से जुड़ी कहानियों में नायक का निजी जीवन भी होता है उसे आप कैसे दर्शाएंगे। उसका कोई अतीत हो सकता है। कोई दुविधा हो सकती है। यह सब कहानी के मुताबिक ही करना पड़ता है। जब मैंने आरण् क लिखा था तो मेरे लिए उसमें थ्रिलर एंगल जरूरी था उतना ही कस्तूरी डोगरा का पात्र। उसके पति और बच्चों के साथ उसका रिश्ता उसका छोटे शहर से होना और बड़े शहर से आए अधिकारी साथ उसके मतभेद। उन चीजों पर भी उतना ही थ् ान दिया था जितना बाकी कहानी पर दिया था। शायद उस वजह से वह लोगों को पसंद आया। दिल् ी या मुंबई की महिला अधिकारी आपको एकसमान नहीं दिखेंगी। उनकी अपनी सामाजिक, आर्थिक स्थिति, परिवेश अलग होगा। अगर शादीशुदा है तो उसकी जिंदगी थोड़ी अलग होगी। उसके प्रोफेशन का उसके जीवन पर क्या असर होगा। डेल्ही क्राइम में शेफाली शाह का किरदार देखें तो वह अलग लेवल की ही पुलिस अधिकारी है। डिजिटल प्लेटफार्म पर अभिनेत्रियों को पुलिसकर्मी बनने का भी काफी मौका मिल रहा है। आरण्यक का दूसरा सीजन अगले साल लाने की तैयारी है। शो में पुलिस अफसर की भूमिका निभाने को लेकर रवीना का कहना है कि मेरे लिए यह बहुत बड़ी बात थी कि मुझे पुलिस अफसर का रोल मिला। मैं वास् व में पुलिस में आना चाहती थी। वो हमेशा से मेरा सीक्रेट ड्रीम था। मैं हमेशा बोलती थी कि किरण बेदी (पूर्व पुलिस अधिकारी) मेरी आदर्श हैं। किसी फिल्म में मुझे ऐसा सशक्त पुलिस अधिकारी की भूमिका नहीं मिली। आरण्यक करने में बहुत मजा आया। हिंदी सिनेमा में फिल्मकार रोहित शेट्टी पुलिस की दुनिया रचने के लिए जाने जाते हैं। अब इस दुनिया को आगे बढ़ाते हुए वह डिजिटल प्लेटफार्म तक पहुंच गए हैं। वह इंडियन पुलिस फोर्स वेब सीरीज लेकर आ रहे हैं, जिसमें सिद्धार्थ मल्होत्रा, शिल्पा शेट्टी पुलिस अधिकारी की भूमिका में होंगे। डिजिटल प्लेटफार्म पर पुलिस की दुनिया दिखाने को लेकर रोहित पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि मैं एक बड़ी सीरीज बनाना चाहता था, कई बड़ी विदेशी सीरीज आ चुकी हैं। भारत से भी एक बड़ी सीरीज बननी चाहिए। वहीं सिद्धार्थ मल्होत्रा पहली बार पुलिस की वर्दी पहनने वाले हैं। वह कहते हैं कि मैं एक्शन में अपने हाथ आजमाना चाहता था। जब रोहित डिजिटल प्लेटफार्म के इस आइडिया के साथ मेरे पास आए, तो ना कहने का सवाल ही नहीं उठता था। उनकी कहानियां सत् घटनाओं से प्रेरित होती हैं, पर उनमें कल्पनाएं जुड़ी होती हैं। पुलिस और अपराध जगत से जुड़ी कहानियों को अलग-अलग जानर से जोड़ने को लेकर चारूदत् कहते हैं आरण् क में मायावी शक्तियों को जोड़ा था। ओटीटी की सुंदरता यह है कि यह खुली किताब है। अगर आप एक दिलचस् कहानी लेते हो और उसमें एक जानर फिक् करते हो तो लोग देखेंगे। इसमें रोमांटिक ड्रामा, पालिटिकल थ्रिलर, हॉरर, कामेडी,सब बना सकते हैं। हर जानर को शामिल करते हुए आप पुलिस ड्रामा को बना सकते हैं। मुझे लगता है कि इसमें किसी जानर तक सीमित रहने की जरूरत नहीं है। पुलिस का किरदार समाज का अहम हिस्सा होता है।

योगी सरकार की नई औद्योगिक नीति 'सामूहिक प्रयास और सामूहिक विकास' का आधार बनेगी

नोएडा पहले उत्तर प्रदेश और फिर उत्तराखंड को औद्योगिक रफ्तार देने के लिए अगर किसी मुख्यमंत्री का नाम आम आदमी के जेहन में आता है तो वह दिवंगत नारायण दत्त तिवारी हैं। नारायण दत्त तिवारी ने अपने छोटे-छोटे और असंतुलित कार्यकालों के दौरान नोएडा जैसे शानदार औद्योगिक शहर की नींव रखी। गाजियाबाद को औद्योगिक रफ्तार दी। गिरते कानपुर को संभाला था। लखनऊ, भदोही, बनारस और यूपी के कई दूसरे जिलों में औद्योगिक इकाइयां खड़ी की थीं। सही कहें तो उन्हीं नीतियों और फैसलों की बदौलत राज्य में औद्योगिक सेक्टर के पिछले करीब 4 दशक ज्यों-त्यों कट गए। पर, चुनैतियां बढ़ती गईं। उत्तर प्रदेश बीमारू बन गया। पिछले साढ़े पांच वर्षों में उत्तर प्रदेश एक बार फिर योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में अपने पांवों पर खड़ा हुआ है। अब गुरुवार को अगले 5 वर्षों के लिए योगी आदित्यनाथ ने राज्य की औद्योगिक विकास नीति में बड़े बदलाव किए हैं। यह बदलाव निःसंदेह उत्तर प्रदेश को बदल देंगे। हम कह सकते हैं, अब यूपी फर्राटा भरेगा। 'उत्तर प्रदेश औद्योगिक निवेश एवं रोजगार प्रोत्साहन नीति-2022' एक निवेशोन्मुख और समेकित निति है। यह उत्तर प्रदेश को आगामी 5 वर्षों में एक रणनीतिक ढांचा दे सकती है। जिसके तहत निजी और सार्वजनिक निवेश से जुड़े निर्णय विश्वास के साथ लिए जा सकते हैं। यह नीति औद्योगिक उपयोग के लिए गैर-कृषि, बंजर और अनुपयोगी भूमि की पूलिंग को प्रोत्साहित करके 'लैण्ड बैंक' सृजित करेगी। अभी तक हरी-भरी और कृषि भूमि को उद्योगों में बदला जाता रहा है। जिसकी वजह से टिकाऊ विकास, खेतीबाड़ी और पर्यावरण के पैरोकार आलोचनाएं करते रहे हैं। यह नई नीति राज्य में एक्सप्रेस-वेज और फ्रेट कॉरिडोर्स के किनारे लैण्ड बैंक व इण्टीग्रेटेड मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर जैसे नवाचार को विकसित करेगी। आपको बता दूं कि उत्तर प्रदेश में 13 एक्सप्रेसवे हैं। इनमें सात निर्माणाधीन हैं। नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे, यमुना एक्सप्रेसवे और आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे योगी सरकार आने से पहले से चल रहे हैं। इनकी लम्बाई 492 किलोमीटर है। पिछले साढ़े पांच वर्षों में योगी आदित्यनाथ सरकार ने बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे, दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे और पूर्वांचल एक्सप्रेसवे पूरे किए हैं। इन तीनों एक्सप्रेसवे की लम्बाई 706 किलोमीटर है। इस तरह उत्तर प्रदेश में फिलहाल 1,225 किलोमीटर लम्बे एक्सप्रेसवे हैं। अब 594 किलोमीटर लम्बे गंगा एक्सप्रेसवे, 91 किलोमीटर लम्बे गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे, 63 किलोमीटर लम्बे लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेसवे, 380 किलोमीटर लम्बे गाजियाबाद-कानपुर एक्सप्रेसवे, 210 किलोमीटर लम्बे दिल्ली-सहारनपुर-देहरादून एक्सप्रेसवे और 117 किलोमीटर लम्बे गाजीपुर-बलिया-मांझीघाट एक्सप्रेसवे बन रहे हैं। करीब 1,455 किलोमीटर लम्बे यह सारे महामार्ग अगले तीन वर्षों में पूरे हो जाएंगे। इस तरह ठीक तीन साल बाद उत्तर प्रदेश में 2,710 किलोमीटर लम्बे एक्सप्रेसवे होंगे। इन्हें बनाने में करीब एक लाख करोड़ रुपये खर्च हो जाएंगे। अब अगर ईस्टर्न और वेस्टर्न रेलवे डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर्स की बात करें तो इनका करीब 1,100 किलोमीटर हिस्सा उत्तर प्रदेश से गुजरेगा। इन्हें बनाने पर भी लाखों करोड़ रुपये खर्च हो रहे हैं। इस पूंजी को वापस हासिल करना और गुणात्मक वृद्धि करके कारोबार, उद्योग व रोजगार में तब्दील करना सरकार की इस नई नीति से साफ जाहिर हो रहा है। यह सारे एक्सप्रेसवे शहरों के बीच केवल फास्ट कनेक्टिविटी देने का जरिया नहीं हैं। नई नीति में इनके किनारे 'अटल इण्डस्ट्रियल इन्फ्रास्ट्रक्चर मिशन' के तहत औद्योगिक पार्क बनाने का विजन है। यह बहुत अच्छा प्रयास है। साथ ही प्राइवेट सेक्टर को औद्योगिक पार्कों की स्थापना के लिए प्रोत्साहन किया है। इन विकासकर्ताओं को भूमि क्रय करने पर लगने वाले स्टाम्प शुल्क में शत-प्रतिशत छूट सरकार देगी। अब तक उद्योगों को भूमि आवंटन सबसे बड़ी समस्या रही है। नोएडा और ग्रेटर नोएडा में तो भूखंड आवंटन भ्रष्टाचार का जरिया बन गया था। पिछली सरकारों के कार्यकाल में ऑटो रिक्शा वाला बता देता था कि किस श्रेणी की जमीन पर कितना पैसा अंडर टेबल जाएगा। वह यह भी कह देता था कि उसका एक रिश्तेदार जमीन दिलवा सकता है। इस स्थिति पर इस सरकार ने सफलतापूर्वक काबू पाया है। अब नई प्रस्तावित नीति में फास्ट ट्रैक भूमि आवंटन की व्यवस्था की गई है। फास्ट ट्रैक भूमि आवंटन कितना लाभकारी है, इसका एक उदाहरण समझिए।

ग्रेटर नोएडा में हीरानंदानी समूह ने इसी सप्ताह उत्तर प्रदेश के पहले डाटा सेंटर की शुरुआत योगी आदित्यनाथ से करवाई है। यह समूह इस प्रोजेक्ट के लिए केवल 600 करोड़ रुपये लेकर उत्तर प्रदेश में आया था। आवेदन के बाद महज एक सप्ताह में भूमि आवंटन ग्रेटर नोएडा विकास प्राधिकरण ने कर दिया। एक महीने में निर्माण शुरू और एक साल में पूरा हो गया। 'फास्ट ट्रैक मॉड' का फायदा यह हुआ कि अब हीरानंदानी समूह पूरे उत्तर प्रदेश में 39,000 करोड़ रुपये का निवेश करेगा। जिससे यूपी देश में सबसे बड़ा डाटा हब बन जाएगा। समूह के प्रवर्तक राज्य के औद्योगिक माहौल से गदगद हैं। उत्तर प्रदेश के उद्योगों को अराजकता ने तबाह किया। उस कोढ़ में बिजली की किल्लत खाज बनी रही। प्रस्तावित नीति में उद्योगों को निर्बाध बिजली आपूर्ति के लिए एक विस्तृत कार्ययोजना पेश की गई है। साथ ही जलापूर्ति, जल निकासी और लॉजिस्टिक्स के विस्तृत उपाय हैं। वित्तीय संसाधनों की सुलभता के लिए अवस्थापना विकास कोष बनेगा। सरकार स्टॉक एक्सचेंजों के माध्यम से इक्विटी पूंजी जुटाने में मदद देगी। इस पॉलिसी में आयात प्रतिस्थापन, निर्यात प्रोत्साहन, अनुसंधान व विकास, नवाचार और बौद्धिक सम्पदा अधिकार को प्रोत्साहन, गुणवत्ता और डिजाइन को प्रोत्साहन, एमएसएमई, ओडीओपी और अन्य स्थानीय उद्योगों की सहायता को समाहित किया है। मुख्यमंत्री और राज्य के तमाम लोग कहते हैं कि अगर उत्तर प्रदेश को एक देश माना जाए तो जनसंख्या की दृष्टि से दुनिया में इसका पांचवां स्थान होगा। जाहिर सी बात है, इतना बड़ा राज्य अस्थिर अर्थव्यवस्था के साथ आगे नहीं बढ़ सकता है। हम अगर करीब 25 करोड़ जनसंख्या का सदोपयोग नहीं कर सकते तो यह पूरे देश के लिए अभिशाप बन सकती है। यह इंडस्ट्रियल पॉलिसी आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश का विजन पेश करती है। इस लक्ष्य को हासिल करने का रास्ता दिखाती है। भारी भरकम जनसंख्या के लिए रोजगार के अवसरों में उत्तरोत्तर वृद्धि जरूरी है। नई नीति रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए बड़ी इंडस्ट्री को विशेष प्रोत्साहन तो देती है, साथ ही उच्च रोजगार सृजन क्षमता वाले क्षेत्रों जैसे हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग, एमएसएमई व स्टार्टअप्स पर केंद्रित है। राज्य का नीतिगत ढांचा, स्वरोजगार और ओडीओपी जैसे प्रमुख कार्यक्रमों के माध्यम से स्थानीय हस्तशिल्पियों के लिए रोजगार सृजन होगा। यह नीति प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार देने में सहायक हो सकती है। इस सबके लिए समांतर रूप से 'ब्रॉण्ड उत्तर प्रदेश' को विकसित करना होगा। यह इमेज हासिल करने के लिए निवेश को प्रोत्साहन और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकृषित करना जरूरी है। उत्तर प्रदेश की छवि को 'सबसे पसंदीदा निवेश गंतव्य' बनाने की व्यापक रणनीति इस पॉलिसी में नजर आती है। यूपी की सरकारें खराब कानून व्यवस्था के कारण चुनाव हारती रही हैं। यह पहली सरकार है, जो अच्छी कानून व्यवस्था के बूते चुनाव जीतकर दोबारा आई है। कारोबारियों और उद्यमियों का भरोसा योगी आदित्यनाथ हासिल कर चुके हैं। यह लचीली और संतुलित पॉलिसी निवेश प्रोत्साहन के लिए विस्तृत कार्ययोजना की परिकल्पना पेश करती है। इससे ना केवल उद्योगों को लाभ मिलेगा बल्कि राज्य के नागरिकों की समाजिक और आर्थिक स्थिति मजबूत करने में मदद मिलेगी। उत्तर प्रदेश बहुत बड़ा है। राज्य में और राज्य के बाहर लम्बे अरसे से रोजगार की तलाश युवाओं के पलायन की वजह रही है। यह नीति पूरे राज्य में उद्योगों को बढ़ावा देगी। इस सरकारी नीति में उद्योगों से अछूते बुन्देलखण्ड और पूर्वांचल को फोकस में रखा गया है। मसलन, बुंदेलखंड में 20 एकड़ या उससे अधिक क्षेत्रफल, मध्यांचल और पश्चिमांचल में 30 एकड़ अथवा उससे अधिक क्षेत्रफल के निजी औद्योगिक पार्क बनाने वालों को सरकार प्रोत्साहित करेगी। प्रदेश के बाकी किसी भी हिस्से में 100 एकड़ से अधिक क्षेत्रफल में विकसित निजी औद्योगिक पार्कों को प्रोत्साहित किया जाएगा। नई उद्योग नीति में भौगोलिक आधार पर वित्तीय प्रोत्साहन, उपादान और स्टाम्प शुल्क जैसी छूट की व्यवस्था समग्रता लाने के लिए हैं। अगर कम्पनी राज्य के बुन्देलखण्ड और पूर्वांचल में इकाई स्थापित करती है तो जमीन खरीद पर लगने वाला स्टांप शुल्क नहीं लिया जाएगा। मतलब, 100 प्रतिशत छूट दी जाएगी। पूरे मध्यांचल में यह छूट 75 प्रतिशत दी जाएगी। पश्चिमांचल में यह रियायत दो हिस्सों में बांट दी गई है। वेस्ट यूपी के गौतमबुद्ध नगर और गाजियाबाद जनपदों को छोड़कर बाकी क्षेत्र में 75 प्रतिशत छूट स्टांप ड्यूटी में सरकार देगी। अगर उद्योग गौतमबुद्ध नगर और गाजियाबाद जनपदों में लगाया जाएगा तो भूमि खरीद पर केवल 50 प्रतिशत स्टाम्प शुल्क में छूट दी जाएगी। उद्योगों का बेहतर वर्गीकरण किया गया है। निवेश प्रतिबद्धता आधारित परियोजनाएं 4 श्रेणियों में सरकार चिन्हित करेगी। प्रत्येक परियोजना की पात्रता आवश्यक न्यूनतम पूंजी निवेश होगा। रियायतें इसी आधार पर मिलेंगी। मसलन, राज्य में 50 करोड़ रुपये से अधिक और 200 करोड़ रुपये से कम पूंजी निवेश वाले उद्योग को वृहद श्रेणी में रखा गया है। इसी तरह 200 करोड़ रुपये से अधिक लेकिन 500 करोड़ रुपये से कम पूंजी निवेश वाली औद्योगिक इकाइयां मेगा श्रेणी में रहेंगी। पॉलिसी में है कि 500 करोड़ रुपये से अधिक किन्तु 3,000 करोड़ रुपये से कम पूंजी निवेश को सुपर मेगा श्रेणी में माना जाएगा। 3,000 करोड़ रुपये से अधिक पूंजी निवेश को अल्ट्रा मेगा श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। कुल मिलाकर यह नीति बताती है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ केवल सरकार चलाने के लिए नहीं उत्तर प्रदेश को अपने पांवों पर खड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं। निःसंदेह यह पॉलिसी अगले साल फरवरी में होने वाली 'ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट' के लिए 10 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव ला सकती है। उत्तर प्रदेश को 'वन ट्रिलियन इकोनॉमी' बनाने में मददगार होगी। 'ब्रांड उत्तर प्रदेश' को दशकों से ऐसी ही सोच की दरकार थी। सबसे बड़ी बात योगी आदित्यनाथ 'सामूहिक प्रयास और सामूहिक विकास' पर जोर दे रहे हैं।

कश्मीर में अभी बाकी है लड़ाई, अलगाववाद और 'काफिर-कुफ्र' वाले चिंतन के विरुद्ध युद्ध अब भी जारी

हाल में जम्मू-कश्मीर के भारतीय संघ में विलय की 75वीं वर्षगांठ मनाई गई। इस अवसर पर कई कार्यक्रम आयोजित हुए। ऐसे ही एक कार्यक्रम में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने महत्वपूर्ण संदेश में कहा, 'अपने बाकी बचे हिस्से गिलगित और बाल्टिस्तान तक पहुंचे बिना जम्मू-कश्मीर अधूरा

है। अभी तो हमने उत्तर दिशा की ओर चलना शुरू किया है। हमारी यात्रा तभी पूरी होगी, जब हम 22 फरवरी, 1994 को संसद में सर्वसम्मति से पारित हुए प्रस्ताव को अमल में लाएंगे। आने वाले समय में पाकिस्तान को उसके कर्मों का परिणाम जरूर मिलेगा।' कश्मीर पर भारत सरकार का यह दृष्टिकोण विलंबपूर्ण ही सही, किंतु स्वागतयोग्य है। इसमें संदेह नहीं कि पाकिस्तान ने जम्मू-कश्मीर को लेकर हमेशा छल-कपट का ही सहारा लिया है। यह पाकिस्तानी कुटिलता का ही प्रमाण है कि उसने गुलाम कश्मीर की पहचान बदलने के लिए उर्दू को राजकीय भाषा का दर्जा दिया है, जबकि उसकी 40 लाख की आबादी में 70 प्रतिशत लोग पोठोहारी भाषी हैं। पोठोहारी पंजाबी भाषा की ही एक उप-भाषा है। ऐसा ही विरोधाभास उसके 'कौमी-तराने' को लेकर भी है। पाकिस्तान की भांति गुलाम कश्मीर न केवल भारत का भौगोलिक हिस्सा है, अपितु अनादिकाल से सांस्कृतिक भारत का भाग भी है। यहीं हजारों वर्ष पूर्व वैदिक ऋचाओं का जन्म हुआ था। सदियों पहले आदि शंकराचार्य ने अपनी 'दिग्विजय यात्रा' का समापन प्राचीन कश्मीर में किया था। तब उस स्थान पर मां सरस्वती को समर्पित शारदा पीठ और विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी। इस पीठ के अवशेष गुलाम कश्मीर की नीलम घाटी में हैं। यह स्थान नियंत्रण रेखा से मात्र 17 किलोमीटर दूर है। अब वहां मंदिर के नाम पर केवल एक प्रवेश द्वार और उस पर बना अर्धमंडलाकार भाग ही शेष है। विभाजन से पहले लाखों-करोड़ों हिंदू तीर्थाटन करने शारदा पीठ जाते थे। भारतीय उपमहाद्वीप में ऐसे असंख्य हिंदू-बौद्ध देवी-देवताओं के पूजास्थल हैं, जो कालांतर में 'काफिर-कुफ्र' से कुप्रेरित जिहाद का शिकार हुए थे। उन्हीं में से एक अनंतनाग स्थित मार्तंड मंदिर भी है।कश्मीर का बहुआयामी संकट भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू की अदूरदर्शिता की देन है। कश्मीर मामले को संयुक्त राष्ट्र में ले जाना, जनमत-संग्रह की बात, 1947-48 के भारत-पाक युद्ध में बढ़ती हुई भारतीय सेना को रोककर एकाएक संघर्षविराम की घोषणा, अनुच्छेद 370-35ए के अंतर्गत जम्मू-कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देना और घोर सांप्रदायिक शेख अब्दुल्ला पर अत्यधिक विश्वास करके देशभक्त महाराजा हरि सिंह को कश्मीर से निष्कासित करना, इन सभी के लिए नेहरू ही जिम्मेदार थे।

संक्षिप्त समाचार

विदेश सचिव क्वात्रा ने न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र प्रमुख गुटेरेस से की मुलाकात

न्यूयार्क । विदेश सचिव विनय क्वात्रा ने गुरुवार को संयुक्त राष्ट्र प्रमुख एंटोनियो गुटेरेस से मुलाकात की और गंभीर मुद्दों पर चर्चा की गई। इसकी जानकारी संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन के हवाले से दी गई। गंभीर मुद्दों पर हुई चर्चा संयुक्त राष्ट्र में भारत के आधिकारिक ट्विटर हैंडल ने ट्वीट किया, विदेश सचिव महासचिवे से मुलाकात की। इस दौरान दोनों ने गंभीर चिंता के मुद्दों पर चर्चा की। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में अपनी ब्रीफिंग में विदेश सचिव ने वैश्विक समुदाय से सामूहिक रूप से उन लोगों को बाहर निकालने का आग्रह किया जो अमेरिकी प्रतिबंध शासन सहित आतंकवादियों का बचाव करते हैं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में भारत की तीन दिवसीय यात्रा पर थे जहां उन्होंने बहुपक्षवाद में वैश्विक चिंताओं और चुनौतियों पर अपने विचार व्यक्त किए। हमें भारत पर करना चाहिए भरोसा- गुटेरेस इस अवसर पर बोलते हुए, गुटेरेस ने कहा, हमें भारत पर भरोसा करना चाहिए क्योंकि यह अपने इतिहास, संस्कृति और इसके संस्करण में पूरी तरह से स्थिरता के एक नए युग की शुरुआत करने में मदद करने के लिए 20 समूह की अध्यक्षता करने जा रहा है।संयुक्त राष्ट्र प्रमुख ने भारत को आगामी 20 समूह की अध्यक्षता करने के लिए बधाई दी और कहा कि 20 देशों का वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का 80 प्रतिशत हिस्सा है, लेकिन यह वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 80 प्रतिशत का भी प्रतिनिधित्व करता है।

नेशनल लोक अदालत १२ नवम्बर को बिजली चोरी एवं अनियमितताओं के प्रकरण में होंगे समझौते

(आधुनिक समाचार सेवा)
शहडोल। 03 नवम्बर 2022- आगामी 12 नवबंर को लगने वाली नेशनल लोक अदालत में बिजली चोरी एवं अनियमितताओं के प्रकरण को समझौते के माध्यम से निराकृत किया जाएगा। कंपनी द्वारा विद्युत उपभोक्ताओं एवं उपयोगकर्ताओं से अपील की गई है कि वे अप्रिय कानूनी कार्यवाही से बचने के लिए अदालत में समझौता करने के लिए संबंधित बिजली कार्यालय से संपर्क करें। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 126 एवं135 के तहत दर्ज बिजली चोरी एवं अनियमितताओं के प्रकरणों में लोक अदालत में समझौता शर्तों का मसौदा जारी कर दिया गया है। कंपनी द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि धारा 126 एवं135 के अंतर्गत लंबित प्रकरण एवं ऐसे प्रकरण जो न्यायालय में दष्ठ।

एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण के कारण गौतमबुद्धनगर जिलाधिकारी के निर्देश, 8 नवंबर तक स्कूल बंद ऑनलाइन चलेंगी कक्षाएं

(आधुनिक समाचार सेवा)
गौतमबुद्ध नगर। एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण के कारण जिलाधिकारी के निर्देशों के अनुसार जनपद गौतमबुद्ध नगर में समस्त बोर्ड के विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाएं 8 नवंबर तक ऑनलाइन संचालित होंगी व कक्षा 9 से 12 तथा उच्च शिक्षण टेक्निकल संस्थानों में कक्षाएं यथासंभव ऑनलाइन संचालित की जाए साथ ही सभी विद्यालयों में अग्रिम आदेशों तक आउटडोर प्रतिबंधित रहेगी।नैनी प्रयागराज स्थित इंडिया होटल के बगल में कपड़े की दुकान और उसके ऊपर कार ऑटो पार्ट्स की दुकान में लगी भीषण आग दमकल की 2 गाड़ियां खाली हो चुकी अभी भी आप पर काबू पाने की कोशिश की जा रही है दमकल की गाड़ियां लगातार आग बुझाने की कोशिश कर रही हैं अभी तक प्राप्त जानकारी के अनुसार करीब-करीब एक करोड़ से ऊपर की संपत्ति का नुकसान ।

अज्ञात बीमारी से 20 सुअरों की मौत से मचा हड़कंप

(आधुनिक समाचार सेवा)
सतना। उचेहरा तहसील मे और आसपास क्षेत्र में पालतू सूअर के मरने का सिलसिला थम नहीं रहा है। बीते रोज तक 20 सूअर की मौत हो गई थी।वहीं सूअरों की मौत से हड़कंप मच गया है। पशुपालन विभाग की ओर से पोस्टमार्टम किए गए सूअर और जीवित सूअर के ब्लड सिरम व स्वेब का सैंपल लिया गया है, सूअरों का पोस्टमार्टम डॉ संदीप शुक्ला द्वारा किया गया।

पीएम नल जल योजना चल रहे कार्य में सतना सांसद और मंत्री रामखेलावन के द्वारा किया गया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार सेवा)
सतना। रामनगर क्षेत्र के तपोस्थल मार्कण्डेय धाम में जल जीवन मिशन के तहत प्रधानमंत्री नल-जल योजना के चल रहे निर्माण कार्य का सतना सांसद गणेश सिंह जी, मंत्री रामखेलावन पटेल,जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल जी साथ ही अन्य जनप्रतिनिधियों के साथ औचक निरीक्षण करते हुए कार्य प्रगति की विस्तार से और आगामी 25 मार्च तक रामनगर ब्लॉक व नवम्बर माह तक मे अमरपाटन में पीने योग्य पानी की सप्लाई सुचारू रूप से प्रारंभ होगी। इसके अलावा भी किसानों की सिंचाई हेतु रामनगर ब्लॉक के हमारे किसान भाइयों के हित के लिए माइक्रो सिंचाई परियोजना के चल रहे कार्य का भी निरीक्षण किया,जानकारी देते हुए खुशी महसूस कर रहा हूँ कि

समीक्षा की। हमारे सतना जिले की यह सबसे महत्वपूर्ण व सबसे बड़ी योजना है,इसके माध्यम से विधानसभा अमरपाटन सहित जिले के अन्य 06 ब्लाकों में हम बाणसागर का पानी पीने योग्य पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं। क्षेत्रवासियों को बताते हुए हर्ष हो रहा है कि आगामी जून तक इस योजना का कार्य पूर्ण हो जाएगा इस योजना का कार्य भी लगभग 40 पूर्ण हो चुका है जिसके माध्यम से लगभग 10 हजार हेक्टेयर भाग पर रामगर के किसान साथियों को सिंचित हेतु लाभ प्राप्त होगा। कांट्रेक्टर एवं जल संसाधन के अधिकारियों द्वारा इस योजना को भी नवंबर 2023 तक सुचारू रूप से संचालित करने का आश्वासन दिया गया है।

वायु प्रदूषण : निर्माण स्थलों पर एंटी स्मागगन लगानी जरूरी, नहीं तो होगी कार्रवाई

(आधुनिक समाचार सेवा)
फरीदाबाद । बढ़ते वायु प्रदूषण के चलते अब निर्माण स्थलों पर एंटी स्माग गन लगानी होगी। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने इसे लगाना अनिवार्य कर दिया है। इस आदेश के बाद हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी सक्रिय हो गए हैं। अब अधिकारी सुनिश्चित करेंगे कि निमार्ण स्थलों को निर्माण सामग्री ढकी है, कचरे का निस्तारण सही तरीके से हो रहा है, पानी का छिड़काव किया जा रहा है और एंटी स्माग गन लगा दी है। निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल-मिट्टी के कण से सबसे अधिक प्रदूषण का स्तर बढ़ता है। इसकी रोकथाम के लिए पानी की महीन बौछार होना जरूरी है ताकि धूल कण जमीन पर आ जाएं। 500 वर्ग मीटर या इससे ज्यादा स्थल पर निर्माण कार्यों की जानकारी जीएनसीटीडी वेब पोर्टल पर भी अपडेट करना होगी। आयोग की ओर से जारी आदेश में बताया गया है कि क्षेत्रफल के मुताबिक एंटी स्माग गन लगाई जाएंगी। पांच से 10 हजार वर्ग मीटर के दायरे में एक, 10 हजार से 15 हजार के निर्माण स्थल दायरे में दो, 15 से 20 हजार के दायरे में तीन और 20 हजार से अधिक वर्ग मीटर के दायरे में कम से कम चार एंटी स्माग गन लगानी होंगी। कैसे कम करती है एंटी स्माग गन यह स्माग गन लगभग 30 मीटर की परिधि में चारों तरफ पानी की फागिंग करेगी। गन के साथ हजार लीटर पानी का टैंक भी जुड़ा होगा। एंटी स्माग गन एक अति सूक्ष्म कोहरे को बनाने के लिए इस प्रकार डिजाइन की गई है, जिससे यह बहुत महीन पानी की बूंदें (10 माइक्रान से कम) उत्पन्न करती हैं। यह महीन पानी की बूंदें बड़े क्षेत्र में उच्च गति के पंखे की मदद से बौछार के माध्यम से फैलाई जाती हैं। इससे यह हवा में मौजूद छोटे धूल कणों को अवशोषित कर लेती हैं। इससे वायु प्रदूषण का स्तर घट जाता है।हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी दिनेश कुमार ने बताया कि आयोग के आदेश को संबंधित लोगों तक पहुंचा दिया जाएगा और निगरानी की जाएगी।

श्रीकांत त्यागी प्रकरण में त्यागी समाज पर अभद्र टिप्पणी करने के आरोपी भाजपा नेता संचित शर्मा उर्फ सिंगा पंडित पर जानलेवा हमला

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। बहुचर्चित श्रीकांत त्यागी प्रकरण में त्यागी समाज पर अभद्र टिप्पणी करने के आरोप में जेल गए भाजपा नेता संचित शर्मा उर्फ सिंगा पंडित पर आज अज्ञात बदमाशों ने जानलेवा हमला कर दिया ।बदमाशों ने उन्हें लाठी-डंडों और लोहे की रॉड से जमकर पीटा जिस कारण भाजपा नेता के शरीर में कई जगह फ्रैक्चर हो गए हैं। घायल सिंगा पंडित को उपचार के लिए ग्रेटर नोएडा के कैलाश अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।भाजपा के ग्रेटर नोएडा मंडल के अध्यक्ष महेश शर्मा ने बताया कि गुरुवार शाम को वह लडपुरा गांव निवासी भाजपा नेता संचित शर्मा उर्फ सिंगा पंडित व अपने एक अन्य साथी के साथ कार से कहीं जा रहे थे। केंद्रीय विहार तिराहे पर उनकी कार को स्कार्पियो सवार युवकों ने ओवरटेक कर जबरन रुकवा लिया। महेश शर्मा का आरोप है कि स्कार्पियो सवार युवकों ने उन पर हथियार तान दिए और मारपीट शुरू कर दी। इस दौरान स्कार्पियो सवार युवकों ने सिंगा पंडित को घेर लिया और लाठी-डंडों व रॉड से उसके साथ जमकर मारपीट की।मौके पर लोगों की भीड़ इकट्ठा होते देखकर हमलावर स्कॉर्पियो में बैठकर फरार हो गए। घायल सिंगा को ग्रेटर नोएडा के कैलाश अस्पताल ले जाया गया जहां गंभीर हालत को देखते हुए उसे आईसीयू में रखा गया है। चिकित्सकों के मुताबिक सिंगा पंडित के पैर ,छाती सहित कई जगह की हड्डियां टूटी हुईं है। अस्पताल के डाक्टरों ने बताया कि स्थिर होने पर उनका ऑपरेशन किया जाएगा। फिलहाल सिंगा पंडित का आईसीयू में इलाज चल रहा है। वहीं भाजपा के मंडल अध्यक्ष पर पिस्टल तानने तथा सिंगा पंडित पर हुए जानलेवा हमले के बाद भाजपाइयों में खासा रोष व्याप्त है।

एनटीपीसी दादरी प्लांट पर नहीं थम रहा किसानों का हंगामा

नोएडा के 81 गाँव के किसान धरने में हुए शामिल और महिलाओं का हुजूम भी उमडा

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। एन टी पी सी प्लांट से प्रभावित 24 गाँव के किसान और बडी तादात मे महिलाओं ने धरने का समर्थन किया। पुलिस ने किसान नेता सुखवीर खलीफा, ऊदल आर्य, प्रवीण चौहान, मुनीन्द्र समेत 30 से अधिक लोगों को हिरासत में ले लिया भी आई हैं।किसानों के प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे भारतीय किसान परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुखवीर पहलवान समेत करीब 30 लोगों को हिरासत में ले लिया गया है, जिसमें कुछ महिलाएं भी शामिल हैं। इस धरने का भारतीय किसान यूनियन अजगर और मंगलवार को क्षेत्र के गांव ऊंची अमीरपुर, खंगौड़ा, सीधीपुर, ततारपुर, रसूलपुर, प्यावली बिसाहड़ा, बड़पुरा, कैलाश पुर, रूपबांस समेत 24 गांवों के किसान प्लांट के गेट पर पहुंच गए और वहां पर तालाबंदी का प्रयास करते हुए धरना दिया। हालांकि, भारी फोर्स होने के

है, जिसमें महिलाएं भी शामिल हैं और गांवों में बड़ी संख्या में फोर्स तैनात कर दी है। इसको देखते हुए नोएडा के 81 गाँव के किसान धरने में शामिल हो गये । एनटीपीसी दादरी में 1980 में हुए जमीन अधिग्रहण के मामले में एक बार फिर से किसान सड़कों पर आ गए हैं। मंगलवार को सैकड़ों की तादाद में आए किसानों ने प्लांट के गेट पर जमकर हंगामा किया और वहां पर तालाबंदी का प्रयास किया। इस दौरान पुलिस और पीएसी के अधिकारियों ने हंगामा कर रहे किसानों को काफी समझाने का प्रयास किया। जब किसान नहीं माने तो पहले तो उन पर वाटर केनन और फिर बाद में लाठीचार्ज कर खदेड़ दिया गया । इसमें कुछ किसानों को चोट अन्य किसान संगठनों ने समर्थन किया। और कंधे से कंधा मिलाकर चलने का आश्वासन दिया। एनटीपीसी दादरी के लिए वर्ष 1980 में जमीन का अधिग्रहण किया गया था। किसानों का कहना है कि उस दौरान कुछ जमीन 10 रुपये के रेट पर और कुछ जमीन 150 रूपये के रेट पर अधिग्रहित हुई थी। उस समय करार किया गया था कि जो सुविधाएं और मुआवजा प्राधिकरण के द्वारा अन्य किसानों को दिया जाएगा, वही उन्हें भी मिलेगा। अब किसानों की मांग है कि उन्हें बढ़ा हुआ मुआवजा दिया जाए और क्षेत्र का विकास हो। इन मांगों को लेकर किसानों ने प्राधिकरण को 31 अक्टूबर तक का समय दिया था और एक नवंबर से प्लांट पर तालाबंदी का ऐलान किया था। इसी क्रम में कारण वह तालाबंदी नहीं कर सके। कई किसानों के चोटें भी आईं इस दौरान उनकी अनेक बार पुलिस अधिकारियों से नोंकझोंक भी हुई। आरोप है कि दोपहर में अचानक से प्लांट पर पीएसी कर्मियों की संख्या बढ़ गई और उसके बाद किसानों पर पहले फायर बिग्रेड की गाड़ियों से पानी की बौछार डाली गई और फिर उन पर लाठीचार्ज कर दिया गया, जिसमें अनेक किसानों के चोटें भी आई हैं। किसानों के अनुसार, पुलिस ने किसान नेता सुखवीर खलीफा, ऊदल आर्य, प्रवीण चौहान, मुनीन्द्र समेत 30 से अधिक लोगों को हिरासत में ले लिया है, जिसमें महिलाएं भी शामिल हैं और गांवों में बड़ी संख्या में फोर्स तैनात कर दी गई है। हालांकि, पुलिस अधिकारी लाठीचार्ज की बात से इनकार कर रहे हैं।

180 उत्तर कोरियाई वारप्लेन से अलर्ट हुआ दक्षिण कोरिया, आनन-फानन में सीमा पर रवाना किए अपने जेट

सियोल। उत्तरी सीमा में करीब 180 उत्तर कोरियाई वारप्लेन को देखने की जानकारी मिलते ही दक्षिण कोरिया अलर्ट हो गया। यहां की सेना ने तुरंत अपने जेट को रवाना कर दिया। यह जानकारी दक्षिण कोरियाई सेना ने दी। सेना ने बताया कि इसने शुक्रवार को चार घंटे से अधिक समय तक उत्तरी सैन्य सीमा में उत्तर कोरियाई वारप्लेन के उड़ान भरने की जानकारी मिलते ही अपने फाइटर जेट को स्क्रैम्बल कर दिया। न्एक्सपर्ट का कहना है कि उत्तर कोरिया अस्थिरता को बढ़ावा दे रहा है। इसके जरिए वह अमेरिका पर दवाब बना रहा है कि उसे परमाणु ताकत के तौर पर पहचान मिले। उल्लेखनीय है कि उत्तर कोरिया की ओर से हथियारों के परीक्षण के जवाब में अमेरिका व दक्षिण कोरिया ने बड़े पैमाने पर हवाई युद्धाभ्यास करने की घोषणा की

थी। उत्तर कोरिया ने इसका जवाब देने की चेतावनी दी थी जिसके बाद गुरुवार रात को यह परीक्षण किया गया।

कश्मीर में मनी लॉन्ड्रिंग मामले में संलिप्त अलगाववादी नेता शब्बीर शाह का मकान अटैच

(आधुनिक समाचार सेवा)
श्रीनगर। प्रवर्तन निदेशालय ने शुक्रवार को कहा कि उसने केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा देने के एक मामले से जुड़ी मनी लॉन्ड्रिंग जांच में संलिप्त पाए गए अलगाववादी नेता शब्बीर अहमद शाह के श्रीनगर स्थित घर को अटैच किया है। अधिकारियों ने कहा कि 21.80 लाख रुपये का यह घर श्रीनगर के बरजुल्ला थाना क्षेत्र के सनत नगर के बोतशाह कॉलोनी में स्थित है। लश्कर-ए-तैयबा के प्रमुख हाफिज सईद सहित अन्य के खिलाफ गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) की विभिन्न धाराओं के तहत मई 2017 में दर्ज प्राथमिकी की जांच कर रही एनआइए ने शाह को भी इसमें संलिप्त पाया। जांच के दौरान यह बात सामने आई कि कश्मीर में पथराव, जुलूस, विरोध, बंद,

हड़ताल और अन्य विध्वंसक गतिविधियों के माध्यम से कश्मीर घाटी में अशांति फैलाने की गतिविधियों में शब्बीर अहमद शाह सक्रिय रूप से शामिल था। जांच में यह बात सामने आई है कि कश्मीर में अशांति फैलाने के लिए शब्बीर शाह आतंकवादी संगठन हिजबुल मुजाहिदीन (एचएम) सहित पाकिस्तान में स्थित अन्य आतंकवादी संगठनों से लिया करता था। यह राशि उस तक हवाला सहित अन्य माध्यमों से पहुंचाई जाती थी। शाह ने भी इस राशि का आतंकवाद के साथ-साथ अन्य राष्ट्रविरोधी अभियानों का जमकर इस्तेमाल किया। ईडी ने एक बयान में कहा कि कश्मीर घाटी में आतंकवादी गतिविधियों का समर्थन करने के वाले शब्बीर शाह के खिलाफ काफी सबूत जुटाए जा चुके हैं। आपको बता दें कि कश्मीर में अशांति फैलाने के लिए आतंकवादी संगठनों का साथ देने वाले अलगाववादी नेताओं, व्यापारियों के खिलाफ एनआइए, एसआइए सहित अन्य कई एजेंसियां काम कर रही हैं।

पहले अनुसूचित जनजाति के लिए नहीं था राजनीतिक आरक्षण

(आधुनिक समाचार सेवा)
जम्मू। जम्मू कश्मीर की नौ विधानसभा सीटें अनुसूचित

जनजातियों के लिए आरक्षित हैं। अनुच्छेद 370 के निरस्त होने से पहले गुज्जर और बक्करवालों को नौकरियों और शिक्षा में तो आरक्षण था, लेकिन अनसूचित जनजातियों को राजनीतिक आरक्षण नहीं था। परिसीमन आयोग ने अनुसूचित जनजाति के लिए 90 सदस्यीय जम्मू कश्मीर विधानसभा में नौ सीटें आरक्षित की हैं। इसमें कश्मीर की चार और जम्मू संभाग की पांच हैं। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार अगर बारामुला, कुपवाड़ा, गांदरबल और कुलगाम के पहाड़ी इस फैसले के बाद भाजपा का साथ देते हैं तो कश्मीर में भी कमल खिल जाएगा।पहाड़ी बिरादरी की अनुसूचित जनजाति के दर्जे की लंबे समय से लंबित मांग को पूरा करने के लिए गृहमंत्री अमित शाह का धन्यवाद। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार में ही संभव हो सकता था, जिसके पास बेहतर करने का हौसला है। जितेंद्र सिंह, केंद्रीय मंत्री यह सब तभी संभव हो रहा है जब केंद्र में भाजपा की सरकार है। केंद्रीय गृह मंत्री ने खुद राजौरी में आकर पहाड़ी समुदाय को जल्द उनका हक दिलाने की बात कही थी जो अब पूरी होती जा रही है। उम्मीद है कि जल्द ही सारी कार्यवाही पूरी हो जाएगी और पहाड़ी समुदाय को एसटी का दर्जा मिल जाएगा। -विबोध गुप्ता, प्रदेश भाजपा महासचिव व पहाड़ी समुदाय के नेतापहाड़ी समुदाय को एसटी दर्जे के लिए हम लंबे समय से संघर्ष कर रहे थे। लोगों की यह मांग पूरी होने जा रही है। हमारे सभी रास्ते साफ हो रहे हैं। अब यह मुद्दा कैबिनेट के पास जाएगा, वहां से पास होकर संसद में पेश होगा। वहां से मंजूरी के बाद एसटी का दर्जा मिल जाएगा। यह सब तभी हो रहा है जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व गृह मंत्री अमित शाह ने हमारे दर्द को समझा। -

चीन में शून्य कोविड नीति के कारण तीन साल के बच्चे की मौत

हांगकांग। उत्तर-पश्चिमी चीन में एक बंद आवासीय परिसर में संदिग्ध गैस के रिसाव होने से तीन साल के बच्चे की मौत हो गई है। बंद आवासीय परिसर में बच्चे की मौत का कारण राष्ट्रपति शी चिनफिंग की कठोर शून्य- कोविड नीति को माना जा रहा है। बच्चे की मौत ने देश में आक्रोश पैदा कर दिया है। अमेरिकी न्यूज चैनल सीएनएन ने यह जानकारी दी है। मृत बच्चे के पिता ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट लिखकर इलाज में देरी होने के कारण अधिकारियों को दोषी ठहराया है। उन्होंने अपने पोस्ट में कहा कि कोविड कार्यकर्ताओं ने सख्त कोविड मानदंड का हवाला देते हुए उसे गांसु प्रांत की राजधानी लांझोउ में अपने परिसर से बाहर निकलने से रोकने की कोशिश की। उन्होंने लिखा, 'अगर मेरे बच्चे को समय पर अस्पताल ले जाया गया होता तो वह बच सकता था।' इस घटनाक्रम के बाद लोगों ने सार्वजनिक शोक व्यक्त करते हुए

कठोर शून्य- कोविड नीति पर गुस्सा जाहिर की है। मालूम हो कि वीबो ट्विटर जैसा ही चीन का एक सोशल मीडिया प्लेटफार्म है। इस पोस्ट को अब तक करोड़ो बार देखा जा चुका है। सीएनएन ने उस व्यक्ति के सोशल मीडिया पोस्ट का हवाला देते हुए बताया कि संदिग्घ गैस के रिसाव से बच्चा और मां दोनों बीमार पड़ गए। मां के तबीयत में सुधार हुआ लेकिन तीन साल के बच्चे ने जहरीली गैस के रिसाव के कारण से तम तोड़ दिया।

भड़के राजीव सेन बोले- मैं इस टॉर्चर के लिए इसे कभी माफ नहीं करूंगा

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। सुष्मिता सेन के भाई राजीव सेन और टीवी एक्ट्रेस चारू असोपा की पर्सनल लड़ाई अब खुलकर मीडिया के सामने आ गई

है। दोनों अब एक दूसरे पर भद्दे से भद्दे आरोप लगा रहे हैं। हाल ही में चारू ने कहा था कि राजीव ने उनकी प्रेग्नेंसी के दौरान चीट किया, एक्ट्रेस ने तो ये भी कहा कि राजीव को शक करने की बीमारी है उन्हें लगता था कि चारू का अफेयर उनके ड्राइवर के साथ भी चल रहा है। चारू असोपा ने सिद्धार्थ कन्नन के साथ बातचीत में अपने मैरिड लाइफ से जुड़े कई बड़े खुलासे किए। एक्ट्रेस ने बताया कि पति राजीव बिना बात के शक करते हैं। चारू ने इस इंटरव्यू में आगे कहा कि, 'राजीव बिना बात के शक करते थे। अगर घर पर कोई आया और उसने पूछा लिया कि, आप कैसी हैं और मैंने उसका जवाब दे दिया तो भी उन्हें लगता कि इससे मेरा अफेयर चल रहा है।' राजीव सेन ने चारू असोपा पर आरोप लगाया था कि उनका अफेयर ड्राइवर के साथ भी चल रहा है। एक्ट्रेस ने कहा, 'राजीव ने कहा कि मेरा ड्राइवर संग चक्कर चल रहा मेरा। ये कैसी बेतुकी बातें है?' चारू ने बताया कि वो अपनी शादी को बचाना चाहती थीं और इसके लिए मैरिज काउंसलिंग के लिए भी अपॉइंटमेंट लिया था, लेकिन राजीव वहां जाने के लिए राजी नहीं हुए। उल्टा चारू को शक है कि राजीव की जिंदगी में कोई और है, क्योंकि वो अक्सर दिल्ली जाया करते थे। बता दें कि राजीव ने भी चारू पर आरोप लगाया है। राजीव ने कहा कि चारू का अफेयर उनके को-स्टार रह चुके करण मेहरा से चल रहा था। ये सभी बातें राजीव को चारू की मां ने बताई हैं। राजीव ने चारू की मां नीलम असोपा के उन्हें भेजे गए वॉयस नोट्स की एक सीरीज भी शेयर की। राजीव का कहना है कि चारू, करण के साथ रोमांटिक रील्स बनाती थीं। ये सब खुलासे खुद एक्ट्रेस की मां ने किए हैं।

करीना के छोटे बेटे जेह को संभालती दिखीं सोहा अली खान के लाडली बेटी इनाया

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। करीना कपूर खान के दोनों बेटे जेह अली खान और तैमूर अली खान बचपन से ही सोशल मीडिया स्टार हैं। दोनों की जब भी कोई तस्वीर सामने आती है, तो वह देखते ही देखते धड़ल्ले से इंटरनेट पर वायरल हो जाती

है। अब हाल ही में करीना के छोटे बेटे और पटौदी खानदान के सबसे छोटे नवाब जेह की एक बहुत ही प्यारी सी फोटो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है। इस फोटो में जेह अपनी कजिन सिस्टर और सोहा अली खान की बेटी इनाया नौमी खेमू का बड़े ही प्यार से हाथ थामे नजर आ रहे हैं। लोग भाई-बहन की इन तस्वीरों पर जमकर प्यार लुटा रहे हैं। इनाया खुद महज अभी 5 साल की हैं, लेकिन वायरल तस्वीर में वह जिस तरह से अपने छोटे भाई को संभाल रही हैं, ये अंदाज सोशल मीडिया यूजर्स को काफी पसंद आ रहा है। कुछ समय पहले ही इस तस्वीर जेह और इनाया की बुआ सबा अली खान ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया है। इस फोटो में नन्हीं इनाया ने बड़े ही प्यार से जेह का हाथ पकड़ा हुआ है और जेह उनके पीछे-पीछे घूम रहे हैं। फोटो में भाई-बहन के बीच की ये प्यारी से बॉन्डिंग काफी अच्छी लग रही हैं। इस फोटो को शेयर करते हुए सबा ने कैप्शन में लिखा, 'बिग सिस्टर.. मैं तुम्हारे साथ हूं जेह। इमी ने जेह का हाथ पकड़ा हुआ है। सोशल मीडिया पर फैंस दोनों की क्यूटनेस से अपनी आंखें ही नहीं हटा पा रहे हैं। एक यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा, 'ये सच बात है। ये दोनों बच्चे बहुत ही प्यारे हैं'। दूसरे यूजर ने लिखा, 'सबा अली खान, आपका जो अपने परिवार के प्रति अटूट प्यार है मैं उसकी बहुत सराहना करती हूं।

ऋतिक रोशन और सैफ अली खान की फिल्म में बड़ा रोल चाहती थीं राधिका आप्टे, कहा-मैंने कई फिल्में

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। ऋतिक रोशन और सैफ अली खान स्टारर एक्शन थ्रिलर 'विक्रम वेधा' बॉक्स ऑफिस पर फिसड्डी साबित हुई। तमिल फिल्म की हिंदी रीमेक वाली इस

मूवी को देखने के बाद लोगों ने सैफ और ऋतिक के अभिनय की तारीफ तो की, लेकिन पीएस-1 के साथ 30 सितंबर को रिलीज हुई ये फिल्म कमाई के मामले में पिछड गई। अब जल्द ही ओटीटी पर रिलीज होने जा रही 'मोनिका ओह माय डार्लिंग' में नजर आने वाली एक्ट्रेस राधिका आप्टे ने फिल्म में अपने किरदार को लेकर बात की और साथ ही अपनी इच्छा भी जाहिर की। हिंदुस्तान टाइम्स में छपी रिपोर्ट्स के मुताबिक राधिका आप्टे ने फिल्म विक्रम वेधा में अपने रोल को लेकर इच्छा जाहिर की। एक इंटरव्यू के दौरान एक्ट्रेस ने कहा, 'मैंने ये फिल्म की क्योंकि मैं निर्देशक पुष्कर और गायत्री के साथ काम करना चाहती थी। खैर, जो भी ओवरऑल एक्सपीरियंस है वह मेरे लिए मायने रखता है। मैंने कई ऐसी फिल्में रिजेक्ट की हैं, जिसमें मेरा सेंटर कैरेक्टर था, लेकिन मुझे उन फिल्मों की स्क्रिप्ट पसंद नहीं आई थी। हां, लेकिन मैं ये चाहती थी कि फिल्म(विक्रम वेधा) में मेरा रोल बड़ा होता। आपको बता दें कि कि राधिका आप्टे ने फिल्म विक्रम वेधा में सैफ अली खान की पत्नी का किरदार निभाया था। 30 सितंबर को रिलीज हुई फिल्म विक्रम वेधा की टोटल कमाई की बात करें तो इस फिल्म की शुरुआत तो काफी अच्छी रही और मेकर्स के अनुसार इस फिल्म ने पहले हफ्ते में टोटल 58.57 करोड़ का नेट कलेक्शन किया, लेकिन दूसरे हफ्ते में ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कमाई के मामले में काफी पीछे रही और फिल्म ने टोटल 15.30 करोड़ का ही बिजनेस किया। पांचवें हफ्ते तक ये फिल्म सिर्फ और सिर्फ 78.90 करोड़ का ही नेट बिजनेस कर पाई। दुनियाभर में इस फिल्म ने 135.44 की कमाई की।

अक्षरा सिंह की फिल्म 'अग्निसाक्षी' के सेट पर अचानक पहुंचे पुलिस इंस्पेक्टर आकाश यादव

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। भोजपुरी इंडस्ट्री के राइजिंग एक्टर आकाश यादव इन दिनों लगातार अपनी फिल्मों को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। आकाश जल्द ही भोजपुरी सुपरस्टार अक्षरा सिंह के साथ

फिल्म में नजर आने वाले हैं। आकाश, अक्षरा के साथ फिल्म 'अग्निसाक्षी' में काम कर रहे हैं। इस फिल्म में वह एक पुलिसवाले का किरदार निभा रहे हैं। इस फिल्म को लेकर लगातार नई अपडेट्स सामने आ रही हैं। इसी बीच 'अग्निसाक्षी' के शूटिंग सेट से कई तस्वीरें सामने आई हैं, जो काफी चर्चा में बनी हैं। 'अग्निसाक्षी' फिल्म में भोजपुरी क्वीन अक्षरा सिंह और आकाश यादव के अलावा एक्टर प्रदीप पांडेय चिन्टू लीड रोल में हैं। शूटिंग के दौरान कई ट्विस्ट देखने को मिले हैं, जोकि ऑडियंस के लिए फुल एंटरटेनिंग होगा। ऐसे में एक ट्विस्ट यह भी देखने को मिला है जब एक्टर आकाश यादव पुलिस के गेटअप में 'अग्निसाक्षी' की शूटिंग के सेट पर पहुंचे तो उनको देखकर हर कोई बस देखता रहा गया। इतना ही नहीं फिल्म 'अग्निसाक्षी' की शूटिंग के सेट से कुछ तस्वीरें सामने आई हैं, जिसमें आकाश यादव पुलिस की वर्दी में अक्षरा सिंह और प्रदीप पांडेय चिन्टू के साथ नजर आ रहे हैं। वहीं कुछ तस्वीरों में आप देख सकते हैं कि आकाश ऑफिस चेयर पर केस फाइल के साथ बैठे हैं तो वहीं एक तस्वीर में वे सड़क किनारे खड़े वर्दी में नजर आ रहे हैं। बता दें कि आकाश यादव फिल्म में पुलिस इंस्पेक्टर के रोल में हैं। वहीं इस फिल्म की शूटिंग मुंबई के फ्यूचर स्टूडियो में हुई हैं। 'अग्निसाक्षी' को लेकर आकाश काफी एक्साइटेड हैं। अक्षरा सिंह और प्रदीप पांडेय चिन्टू के साथ आकाश यादव पहली बार स्क्रीन शेयर कर रहे हैं।

अकेले के दम पर तब्बू ने बनाई है इतने करोड़ की प्रॉपर्टी, जीती हैं रानी वाली जिंदगी

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। 90 के दशक की मशहूर एक्ट्रेस तब्बू फिल्मों में लगातार एक्टिव हैं। भूल भुलैया 2 की सफलता के बाद अब एक्ट्रेस फिल्म 'दृश्यम 2' से अपने दर्शकों को एंटरटेन करने की पूरी तैयारी कर रही हैं। अभिनय की बात हो, या फिर फिटनेस की आज भी लोग उनकी एक झलक के दीवाने हैं। 4 नवंबर 1970 को हैदराबाद में जन्मी तब्बू का असली नाम तबस्सुम फातिमा हाशमी हैं। आज अपना 52वां जन्मदिन मना रही हैं। 'भोला' एक्ट्रेस के जन्मदिन के खास मौके पर आज हम आपको उनकी नेटवर्थ और प्रॉपर्टी के बारे में बताने जा रही हैं। आपको बता दें कि फिल्मों में बिलकुल सिंपल लुक में नजर आने वालीं तब्बू रानी वाली जिंदगी जीती हैं। तब्बू 52 साल की हैं और उन्होंने अब तक शादी नहीं की हैं। महज 15 साल की उम्र में अपने करियर की शुरुआत करने वालीं तब्बू करोड़ों की मालकिन हैं। ट्रेड एनालिस्ट के मुताबिक तब्बू एक फिल्म के लिए लगभग 2 से 4 करोड़ तक की फीस लेती हैं। इसके अलावा

वह ब्रांड एडोर्समेंट से भी काफी पैसा कमाती हैं। रिपोर्ट्स की मानें तो एक्ट्रेस की महीने की कमाई लगभग 25 लाख के आसपास के है। एक अभिनेत्री होने के साथ-साथ एक बिजनेसवुमन भी हैं और एक्ट्रेस की लगभग टोटल नेटवर्थ 22 करोड़ के आसपास है। मीडिया रिपोर्ट्स का मुंबई में ही सिर्फ लग्जरी हाउस नहीं है, बल्कि उनके हैदराबाद में भी कई आलीशान और रॉयल हाउस है। प्रॉपर्टी के साथ-साथ तब्बू को गाड़ियों का भी काफी शौक है और रिपोर्ट्स की मानें तो ऑडी 7 के अलावा एक्ट्रेस के पास मर्सडीजऔर जैगुआर 7 समेत कई लग्जरी गाड़ियां हैं। हैदराबाद और मुंबई के अलावा तब्बू ने गोवा में भी खुद का बंगला लिया हुआ है। मीडिया रिपोर्ट्स का मुंबई में ही सिर्फ लग्जरी हाउस नहीं है, बल्कि उनके हैदराबाद में भी कई आलीशान और रॉयल हाउस है। प्रॉपर्टी के साथ-साथ तब्बू को गाड़ियों का भी काफी शौक है और रिपोर्ट्स की मानें तो ऑडी 7 के अलावा एक्ट्रेस के पास मर्सडीजऔर जैगुआर `7 समेत कई लग्जरी गाड़ियां हैं। हैदराबाद और मुंबई के अलावा तब्बू ने गोवा में भी खुद का बंगला लिया हुआ है।

ढेर हुई अक्षय कुमार की 'राम सेतु', 10 दिनों में कमाए बस इतने रुपये

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। अक्षय कुमार की 'राम सेतु' दिवाली के मौके पर रिलीज हुई और 10 दिनों में ही बॉक्स ऑफिस पर फिल्म का डब्बा गुल हो गया। ओपनिंग डे पर अच्छे

कलेक्शन के साथ खुली 'राम सेतु' की कमाई हर आने वाले दिन के साथ घटती जा रही है। अब तो नौबत ये आ गई है कि इस फिल्म के ज्यादातर शो दूसरी फिल्मों को दे दिए गए हैं। इसके साथ रिलीज हुई अक्षय देवगन की 'थैंक गॉड' का हाल तो इससे भी बुरा है। अक्षय कुमार को 'राम सेतु' से काफी उम्मीदें रही होंगी। उनकी पिछली चार फिल्मों को वो सफलता नहीं मिली जैसी किसी सुपरस्टार की फिल्मों को मिलनी चाहिए। 15.25 करोड़ की ओपनिंग लेने वाली 'राम सेतु' के लिए 10 दिनों बाद ही 2 करोड़ कमाना भी भारी पड़ रहा है। फिल्म अब तक अपनी लागत नहीं निकाल पाई है। आज यानी 4 नवंबर को सिनेमाघरों में तीन-तीन नई फिल्में रिलीज हो रही हैं जिसके बाद कयास लगाए जा रहे हैं कि 'राम सेतु' मिस्टर इंडिया की तरह स्क्रीन्स से गायब ही हो जाएगी। राम सेतु' को परफॉर्म करने के लिए छह दिनों का लंबा वीकेंड मिला था जिसका फायदा उठाने में अक्षय कुमार पूरी तरह से नाकाम रहे। फिल्मों के कलेक्शन का आंकड़ा जारी करने वाली वेबसाइट की रिपोर्ट के अनुसार 'राम सेतु' ने 10वें दिन 2.20 करोड़ की कमाई की है (यह आंकड़े शुरुआती हैं इनमें फेरबदल संभव है) इसके साथ ही फिल्म की कुल कमाई पहुंच गई 66.40 करोड़। गुरुवार, 03 नवंबर को 'राम सेतु' की हिन्दी बेल्ट में कुल ऑक्यूपेंसी रही 8.11। बॉलीवुड हंगामा के अनुसार 'राम सेतु' की कुल लागत है 70 करोड़ के आसपास। ऐसे में ये पीरियड ड्रामा फिल्म 10 दिनों में अपनी लागत भी नहीं निकाल पाई है। माना जा रहा है कि शुक्रवार को तीन नई फिल्में मिली, डबल एक्सेल और फोन भूत के रिलीज होने से अक्षय कुमार की इस फिल्म के लिए टाइम ओवर हो जाएगा।

दशकों पहले भी बनते थे आइटम सॉन्ग, वैजयंती माला से लेकर माधुरी दीक्षित ने धड़काये दिल

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। गाने के बिना फिल्में अधूरी होती हैं। फिल्मों में गाने डाले जाते हैं, ताकि लोगों का मनोरंजन बना रहे, खासकर अगर वह आइटम सॉन्ग हों। आजकल की फिल्मों के लिए ऐसे सॉन्ग्स आम बात हो गए हैं। आज के समय में जो आइटम गाने दिखाए जाते हैं,

उनमें स्किन शो जरूर शामिल होता है, जो कि पहले की फिल्मों में न के बराबर होता था। हाल ही में कंगना रनोट ने पॉपुलर गाने 'आइये मेहरबान' का हवाला देते हुए कहा कि बिना फूहड़ता के भी आइटम नंबरों को शालीनता से फिल्माया जा सकता है, जैसा कि पहले की फिल्मों में होता था। इस कड़ी में एक नजर डालते हैं बदलते दौर में अलग ढंग से फिल्माए गए आइटम सॉन्ग्स पर और जानते हैं कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में इस तरह के गानों की शुरुआत कैसे हुई। आइटम सॉन्ग की हिस्ट्री से पहले जानते हैं कि इसे क्या सोच कर शुरू किया गया था। आइटम सॉन्ग का क्लासिकल मीनिंग गाने के बोल और उसकी सेनशुएलिटी से होता है। जब बॉलीवुड में इस तरह के गानों की शुरुआत हुई, तब ऐसी धारणा थी कि ऐसे गानों में उसी को लिया जा सकता है, जो सुंदर हो और जिसका इस्तेमाल सिर्फ उस गाने के लिए ही हो। हालांकि, आज भी इसी तरह की सोच के साथ गाने के लिए किसी का चुनाव होता है, लेकिन अब यह जरूरी नहीं रह गया है कि वह फिल्म के सिर्फ उसी गाने में दिखे। बॉलीवुड में आइटम नंबर की शुरुआत पद्मिनी और वैजयंती माला जैसी दिग्गज अभिनेत्रियों की फिल्मों से हुई थी। वैजयंती माला की फिल्में 'नागिन', 'मधुमती', 'साधना' में आइटम नंबर रखे गए थे। वह अपने दौर की टॉप एक्ट्रेस थीं और तब उन्होंने कई आइटम डांस किए। अभी तक फिल्मों में इस तरह के गाने चल रहे थे, लेकिन बॉलीवुड में आइटम सॉन्ग्स को वो तवज्जो नहीं मिल रही थी, जो हेलेन पर फिल्माए गानों से मिलने लगी। 'डॉन' और बाकी फिल्मों में हेलेन के आइटम नंबर्स ऐसे पॉपुलर हुए कि मेकर्स ने ऐसे गानों को हर फिल्म में डालना जरूरी भी समझा और उसके साथ एक्सपेरिमेंट करना भी शुरू कर दिया। इंडस्ट्री में फिल्में हिट कराने के लिए आइटम सॉन्ग को रखना जरूरी माना जाने लगा। 80-90 के दशक की लीडिंग एक्ट्रेस ने भी आइटम गानों में ठुमके लगाना शुरू कर दिया। उस जमाने में फिल्माए गए 'एक दो तीन', 'छम्मा-छम्मा' गाने आज तक के सक्सेसफुल आइटम नंबर्स में गिने जाते हैं। इसके बाद आए 'मुन्नी बदनाम हुई', 'शीला की जवानी' जैसे गाने, जो इतने पसंद किए गए कि आज भी किसी भी पार्टी में प्ले किए जाते हैं।

जानवी कपूर को थाई हाई स्लिट 'सेफ्टी पिन' ड्रेस में किया गया स्पॉट

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। जाह्नवी कपूर को हाल ही में मुंबई में एक सेट पर स्पॉट किया गया है। इस अवसर पर उन्होंने ब्लू कलर की थाई हाई स्लिट गाउन पहन रखी है। वहीं उन्होंने

हाई हील्स भी पहन रखी है। उनके बाल खुले हुए हैं। उन्होंने मेकअप कर रखा है और वह इयरिंग भी पहने नजर आ रही है। खास बात यह है कि उनकी ड्रेस में कई जगह बड़ी-बड़ी सेफ्टी पिन लगी हुई ह जाह्नवी कपूर को सोशल मीडिया पर जमकर ट्रोल किया जा रहा है। एक ट्रोलर ने लिखा है, 'उर्फी की हवा लग गई। यह भी पिन पर आ गई।' वहीं एक ने लिखा है, 'पिन ड्रेस।' एक ने लिखा है, 'हम पिन लगाए तो गरीब।' एक ने लिखा है, 'सेफ्टी पिन वाली ड्रेस।' एक ने लिखा है, 'उर्फी से इंस्पायर ड्रेस।' वीडियो में जाह्नवी कपूर काफी खूबसूरत लग रही है। जाह्नवी कपूर की जल्द फिल्म मिली रिलीज होने वाली है। वह इन दिनों इस फिल्म का प्रमोशन कर रही है। इस फिल्म में उनके अलावा और भी कई कलाकारों की अहम भूमिका है। जाह्नवी कपूर की हाल ही में फिल्म गुड लक जेरी रिलीज हुई थी। इस फिल्म में उन्होंने अहम भूमिका निभाई थी। यह फिल्म पंजाब की ड्रग्स समस्या पर आधारित है। इस फिल्म को कॉमेडी के माध्यम से दिखाया गया था जाह्नवी कपूर की सोशल मीडिया पर काफी बड़ी फैन फॉलोइंग है। वह सोशल मीडिया पर अक्सर अपनी हॉट और बोल्ड तस्वीरें और वीडियो शेयर शेयर करती है। इसे लेकर उनके फैंस भी काफी उत्साहित रहते हैं। जाह्नवी कपूर का अंदाज फैंस को काफी पसंद आता है। वह कई कलाकारों के साथ काम भी कर चुकी है।

इन दो कंटेस्टेंट्स के बीच हाथापाई की आई नौबत, शालीन की वजह से टीना नहीं बन पाईं कैप्टन

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। बिग बॉस के घर में कंटेस्टेंट्स के आपसी रिश्ते गिरगिट से भी ज्यादा तेजी से रंग बदल रहे हैं। एक दिन कोई किसी का करीबी दोस्त, तो वही दूसरे दिन कोई किसी का कट्टर दुश्मन बना नजर आ रहा

है। बिग बॉस खुद भी इस साल इस गेम में इतने ज्यादा शामिल हो गए हैं कि वह कंटेस्टेंट की एक-दूसरे के सामने पोल खोलने से पीछे नहीं रह रहे हैं। गुरुवार के एपिसोड में भी कुछ ऐसा ही हुआ, जहां दो कंटेस्टेंट्स के बीच इतना झगड़ा हुआ कि बात हाथापाई तक पहुंच गई, तो वही दूसरी तरफ शालीन के गुस्से के कारण टीना दत्ता को सबसे पहले कैप्टेंसी रेस से बाहर होना पड़ा। गुरुवार के एपिसोड में सलमान खान के इस विवादित शो में और क्या-क्या खास रहा, उसे जानने के लिए पढ़िए ये हाईलाइट्स। बिग बॉस के घर में गुरुवार के एपिसोड में कैप्टेंसी टास्क खेला गया, जहां घर के चार एक्स कैप्टेन्स यानी कि शिव, निमृत, गौतम और अर्चना को मिलकर घर का नया कैप्टन चुनना था। बिग बॉस ने गार्डन एरिया में मशरूम रखे और चारों एक्स कैप्टेन्स को पाइप पाइपर बनाया। इन पाइप पाइपर को अपना इंस्ट्रूमेंट बजाते हुए मशरूम से घर के उन सदस्यों को पूल में फेंकना था, जिसे वह कैप्टन नहीं बनाना चाहते। जहां सभी कैप्टेन्स ने बारी-बारी ये प्रक्रिया की और अंत में शिव की बारी आने तक सिर्फ अब्दु रोजिक, एमसी स्टैंड और सुम्बुल ही अपने मशरूम के पास खड़े रहे। ऐसा कहा जा रहा है कि अब्दु इस वीक कैप्टेन बने हैं। हालांकि आज के एपिसोड में कैप्टन कौन बना ये तो नहीं दिखाया गया, लेकिन साजिद जिस तरह से शिव को ये समझा रहे थे कि वह अब्दु को नहीं स्टैंड को कैप्टन बनाए, उससे यही लगता है कि ये गेम बिलकुल पलट भी सकता है। बिग बॉस के घर में हर सीजन में कोई न कोई कंटेस्टेंट ऐसा आता है जिसका अग्रेसिव व्यवहार हर घरवाले को अखरता है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डा0 दीपक अरोरा द्वारा
रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए
बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र.) 211002 से मुद्रित
एवं सी-41 यूपीएसआईडीसी
औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
(उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।